₹15/-

वर्ष 42 अंक 11 नवम्बर 2015

हँसती दुनिया

मन की सफाई ✿ दीप जले ✿ पहेलियां ✿ यादगार दिवाली ✿ आई है दीवाली
मछलियां तरह–तरह की ✿ बारहसिंगा ✿ कभी न भूलो ✿ लालच का फल

हँसती दुनिया

● वर्ष 42 ● अंक 11 ● नवम्बर 2015 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subcripation Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries
Equillant to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4 सबसे पहले
5 सम्पूर्ण अवतार बाणी
9 कभी न भूलो
19 समाचार
20 अनमोल वचन
28 पहेलियां
29 भैया से पूछो
37 वर्ग पहेली
38 पढ़ो और हँसो
44 जन्म दिन मुबारक
46 रंग भरो परिणाम
48 आपके पत्र मिले

कहानियां

6 मन की सफाई
: डॉ सेवा नन्दवाल

12 अन्धकार के बदले ...
: अंजु जैन

16 यादगार दिवाली
: फारुख हुसैन

26 लालच का फल
: मो. साबिर खान

32 कीमती पल
: डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

40 बबूल का पेड़
: रेनू सैनी

विशेष/प्रेरक-प्रसंग

10 अपने अरमान ऊँचे रखें
: ईलू रानी

15 मकड़ियों की अजब ...
: जयेंन्द्र

18 चंद्रमा और मंगल
: अर्चना सौगानी

21 सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी
: विकास अरोड़ा

22 शानदार सींगों वाला बारहसिंगा
: दीपांशु जैन

30 मछलियां तरह–तरह की

42 एक अजूबा है– मृतसागर
: कैलाश जैन

कविताएं

8 मन से मन का, दीप जलाओ
: डॉ. ममता खत्री

11 दीप जले
: गफूर 'स्नेही'

11 दीवाली त्योहार
: महेन्द्र कुमार वर्मा

25 मंगलमय दीवाली आई
: हरजीत निषाद

36 प्यारी दीवाली आई है
: डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

36 आई है दीवाली
: बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

सबसे पहले

रखें स्वस्थ मनोदशा

परिस्थिति, समय, मनोदशा और हालात के अनुसार मनुष्य का कर्म भी बदलता रहता है। आज के तेजी से बदलते आधुनिक संचार (communication) एवं इलेक्ट्रानिक्स (electronics) युग में चीजें भी लगातार बदलती जा रही हैं। हर चीज में speed (रफ्तार) एवं प्रतियोगिता का असर दिखाई देने लगा है। इन हालातों में कुछ धारणाएं और मान्यताएं, जो चिरकाल से चली आ रही थी वे भी अपनी धार खो रही हैं। जैसे आज के बच्चे कल के नेता। आज के बच्चे अपने माता–पिता से काफी आगे पहले ही निकल चुके हैं क्योंकि बच्चों को Computer, mobile, ipod आदि। आज electronics चीजों ने इतना आगे बढ़ा दिया है कि अधिकतर माता–पिता केवल देखते ही रह जाते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में आज के बच्चे कल के नेता नहीं बल्कि आज के बच्चे आज के निर्माता बन कर हमारे सामने आ रहे हैं।

हर वर्ष नवम्बर माह के आते ही बाल दिवस का वर्णन अवश्य होता है क्योंकि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जिनको चाचा नेहरु के नाम से बच्चों में जाने जाते थे, वे बच्चों को बहुत चाहते थे और उनको अच्छे कार्यों के लिए प्रेरणा भी देते थे। हर वर्ष उनके जन्म दिवस (14 नवम्बर) को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। चाचा नेहरु के कोट पर हमेशा गुलाब का फूल लगा रहता था। जो बच्चों को हमेशा सिखाता था कि गुलाब का फूल कांटो में भी हँस कर खुश्बू ही फैलाता है इसलिए ही उनका स्थान हृदय के पास कोट पर था।

प्यारे साथियों, यह विषय विचारणीय है कि बाल दिवस को केवल एक ही दिन क्यों मनाया जाता है। जैसे हर कोई अपना–अपना जन्मदिन मनाता है। जन्मदिन तो एक दिन मनाता है लेकिन जीवन तो पूरा उसे बिताना पड़ता है। अगर मनुष्य में बच्चे जैसी निर्मलता, पावनता, पवित्रता, सरलता और सहजता होगी तो उसका हर दिन बाल दिवस ही होगा।

परिस्थिति, समय और युग जितनी भी तेजी से बदले, यह परिवर्तन तो अवश्यम्भावी ही है परन्तु मनोदशा को स्वस्थ रखना होगा। मनोदशा में अगर जटिलता, कुटिलता और रुखापन होगा तो वह भले ही सांसारिक भौतिक पदार्थों को समीप लाने का कारण बन जाएगी लेकिन इसमें बच्चों वाली पवित्रता, सरलता, सहजता खो जाएगी। इन सभी मानवीय मूल्यों को जाग्रत रखने के लिए नवम्बर में हर वर्ष निरंकारी सन्त समागम का आयोजन किया जाता है। इस बार यह 14–15–16 नवम्बर 2015 को मनाया जायेगा। जिसका सन्देश हर दिन हमें बाल रूप में रहकर बड़ा बनने का सन्देश देता रहेगा।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 126

टुट जांदे ने सभ जंजाल चरन धूड़ जे मस्तक लाईये।
वस विच आ जांदा ए काल चरन धूड़ जे मस्तक लाईये।
कुल लेखा हो जांदै साफ़ चरन धूड़ जे मस्तक लाइये।
कुल अवगुण ने हुन्दे माफ चरन धूड़ जे मस्तक लाइये।
रब दा छिन विच हुन्दै ज्ञान चरन धूड़ जे मस्तक लाइये।
भरमां विच नहीं फसदी जान चरन धूड़ जे मस्तक लाइये।
हिरदे शान्त ते अक्खीं ठंड चरन धूड़ जे मस्तक लाइये।
वस विच आउंदै कुल ब्रह्माण्ड चरन धूड़ जे मस्तक लाइये।
कमल वांग रहिये विच माया चरन धूड़ जे मस्तक लाइये।
वट जांदी ए सारी काया चरन धूड़ जे मस्तक लाइये।
तन ख़ाकी दा नहीं भरोसा की जाणे कद निकलण साह।
कहे अवतार मिले जे साधु चरन धूड़ नूं मस्तक ला।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में निरंकारी बाबा अवतार सिंह जी मानव को समझा रहे हैं कि साधु अर्थात् सद्गुरु के चरणों की धूल मस्तक पर लगाने से जगत के सभी जंजाल अर्थात् जन्म–मृत्यु का चक्र और इससे जुड़ी उधेड़बुन समाप्त हो जाती है। चरण धूल को मस्तक पर लगाने से भाव चरणों पर सिर रखकर और अभिमान से दूर रहकर, सद्गुरु की आज्ञा मानने से है। जो सद्गुरु की चरण धूल मस्तक से लगाते हैं अर्थात् सद्गुरु के वचन मानते हैं, काल भी उनके बस में आ जाता है। भाव, उनका जन्म–मरण का चक्र समाप्त हो जाता है। धर्मराज के पास जीव को अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कर्मों का लेखा है जो सद्गुरु की चरण धूल मस्तक से लगाने से समाप्त हो जाता है फिर उसके खाते में धन या ऋण कुछ भी शेष नहीं रह जाता है, वह शून्य हो जाता हे। सद्गुरु के चरणों में सिर झुकाने से सारे अवगुण माफ हो जाते हैं। कुछ माफ किया जाना बाकी नहीं रहता और उसे क्षणभर में ही सद्गुरु की कृपा से परमात्मा का ज्ञान हो जाता है।

सद्गुरु की आज्ञा में रहने से इन्सान की जान भ्रमों में नहीं फंसती, उसका हृदय शान्त हो जाता है और इस प्रभु को देखकर उसकी आंखों में ठंडक आ जाती है। चरण धूल मस्तक पर लगाने से ब्रह्माण्ड का रहस्य अर्थात् ब्रह्म और माया का भेद समझ में आ जाता है। यह ब्रह्माण्ड उसके वश में आ जाता है। जब माया को बनाने वाले ब्रह्म को जान लेते हैं तब इसकी बनाई माया भी वश में आ जाती है। शरीर में सकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तन आने लगता है और मानव माया रूपी कीचड़ में भी उसी प्रकार प्रसन्नतापूर्वक रहता है जैसे कमल कीचड़ में रहता है लेकिन हमेशा जल के ऊपर रहकर खिला रहता है।

बाबा अवतार सिंह जी मानव को सचेत कर रहे हैं कि खाक़ अर्थात् मिट्टी से बने इस शरीर का कोई भरोसा नहीं है, कभी भी अन्तिम स्वांस के साथ यह मिट्टी का तन भी मिट्टी बन सकता है इसलिए समय रहते सद्गुरु की चरण धूल मस्तक से लगा लो, सद्गुरु की आज्ञा मान लो और अपने जीवन को सार्थक कर लो।

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

मन की सफाई

जतिन ने बड़ी आस्था और श्रद्धा तथा पूर्ण भक्तिभाव से लक्ष्मीजी की आराधना की। दीपावली के पावन अवसर पर प्रसन्न होकर लक्ष्मीजी उसके सामने प्रकट हुई। ऐसे अवसर पर लक्ष्मीजी के दर्शन से वह कृतार्थ हो उठा, लगा जैसे पर्व सार्थक हो गया।

लक्ष्मीजी ने औपचारिकता निभाते हुए पूछ लिया– ''क्या चाहिए वत्स, अपनी मनोकामना बताओ?''

''कुछ नहीं'' संकुचाते हुए जतिन ने कहा तो लक्ष्मीजी आश्चर्य में पड़ते हुए बोलीं– ''क्या सचमुच तुम इतने संतुष्ट या संपन्न हो कि कुछ नहीं चाहिए?''

''हाँ देवी मेरे पास सब कुछ है... दिवाली पर पहनने के लिए नये वस्त्रों का अंबार है, जलाने के लिए पटाखो का भंडार है और खाने के लिए ढेर सारी मिठाइयां।'' जतिन ने बताया। उसकी बातों में पैसों का दर्प झलक रहा था।

''कोई सद्गुण ही मांग लो।'' लक्ष्मीजी पुनः बोली।

''मुझमें कोई बुराई नहीं है, सब मुझे अच्छा बच्चा कहते हैं।'' जतिन ने बताया।

''ठीक है तुम नहीं मांग रहे हो, पर यह अवसर मैं व्यर्थ नहीं जाने दूँगी। अपनी तरफ से एक वस्तु देती हूँ। इसे दीपावली का उपहार समझ लेना।'' लक्ष्मीजी बोली तो जतिन ने आभारपूर्वक हाथ जोड़ लिए।

''यह लो दिव्य दर्पण, इसे जिसके सामने रख दोगे उसके मन के भाव इसमें अंकित हो जाएँगे।'' लक्ष्मीजी ने बताया।

''मुझे पता था, नहीं मांगने पर भी आप अपने मन से कुछ अवश्य प्रदान करेगी और वह अनमोल होगा।'' जतिन ने मुस्कुराते हुए कहा।

''तुम बहुत चतुर हो बालक।'' कहते हुए लक्ष्मीजी अंतर्ध्यान हो गई।

दर्पण हाथ में संभाले जतिन दीपावली–मिलन के लिए निकल पड़ा। सबसे पहले वह अपने दोस्त चाणक्य के पास गया। चालाकीपूर्वक दर्पण इस प्रकार उसके सामने कर दिया कि पता ना चले। चाणक्य ने खुले दिल से उसका स्वागत किया, मिठाई खिलाई और खूब गपशप की। बाहर निकलकर दर्पण देखकर जतिन चौंक गया। चाणक्य के अनेक दुर्गुण दर्पण में झलक रहे थे।

फिर वह अपने चचेरे भाई आदर्श से मिलने जा पहुँचा। वहाँ से निकलकर जतिन ने दर्पण देखा तो उसमें भी अनेक दुर्भावनाएं अंकित थी।

इसके बाद वह जितने भी मित्रों से मिला सबके मन में अनेक बुराईयां थी। दुर्भावनारहित कोई नहीं मिला।

बुझे मन से जतिन घर वापस लौटा। लक्ष्मी मैया की मूर्ति के समक्ष बैठ वह उनका आह्वान करने लगा। लक्ष्मीजी की मूर्ति बोली, ''जल्दी बोलो वत्स कैसे स्मरण किया?''

''माता मैंने आपके दर्पण की मदद से देखा कि सबके मन में अनेक अवगुण हैं, वे अनेक बुराईयों से ग्रसित हैं।''

लक्ष्मी मैया ने मुस्कुराते हुए दर्पण उसके हाथ से लिया और उसका रूख उसकी तरफ कर दिया। यह क्या... जतिन देखकर हड़बड़ा गया। उसमें तो अपने मित्रों से भी अधिक दुर्गुण विद्यमान थे। उसका सिर लज्जा से झुक गया जैसे चोरी पकड़ी गई हो।

''लज्जित होने की आवश्यकता नहीं, यह दर्पण मैंने तुम्हें इसलिए दिया था कि अपने दुर्गुण देखकर दूर कर सको। जितना समय तुमने दूसरों के दुर्गुण देखने में लगाया उतना समय यदि तुम स्वयं को सुधारने में लगाते तो... दीपावली पर अपने घर की सफाई करते हो कि नहीं... इस बार अपने मन की सफाई कर डालो।'' लक्ष्मीजी बोली।

''लेकिन माता... जतिन ने कुछ कहना चाहा तो लक्ष्मीजी ने टोक दिया।''

तुम तो कह रहे थे कि तुम में कोई बुराई नहीं...'' इतना कहते हुए लक्ष्मीजी हँसते हुए अंतर्ध्यान हो गई।

जतिन खिसिया गया, उसे अपनी भूल और बड़बोलेपन का एहसास हुआ। वह सोचने लगा... सबसे पहले अपनी किस बुराई को खत्म किया जाए?

कविता : डॉ. ममता खत्री

मन से मन का, दीप जलाओ

छोड़–छाड़ कर द्वेष–भाव को,
मीत प्रीत की रीत निभाओ।
दीवाली के शुभ अवसर पर,
मन से मन का दीप जलाओ।

क्या तेरा क्या मेरा,
जीवन चार दिनों का फेरा।
दूर कर सको तो कर डालो,
मन का गहन अंधेरा।
निन्दा नफरत बुरी आदतों,
से छुटकारा पाओ।

दीवाली के शुभ अवसर पर,
मन से मन का दीप जलाओ।

खूब मिठाई खाओ छककर,
लड्डू, बर्फी, चमचम, गुझिया।
पर पर्यावरण का रखना ध्यान,
बम कहीं न फोड़े कान।
वायु प्रदूषण धुएं से बचना,
रोशनी से घर द्वार को भरना।

दीवाली के शुभ अवसर पर,
मन से मन का दीप जलाओ।

चंदा सूरज से दो दीपक,
तन मन में उजियारा कर दे।
हर उपवन के फूल तुम्हारे,
जब तक जियो शान से।
हर सुख हर खुशहाली पाओ।

दीवाली के शुभ अवसर पर,
मन से मन का दीप जलाओ।

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल (उटुरु कला)

कभी न भूलो

- जैसे प्रकाश सूर्य का, खुशबू फूल का प्रतीक है उसी प्रकार इन्सानियत इन्सान का प्रतीक है।

  — बाबा हरदेव सिंह जी

- धर्म का अर्थ कट्टरवाद से नहीं है, उसका अर्थ है विश्वास की एक नैतिक सुव्यवस्था में श्रद्धा।

  — महात्मा गाँधी

- पृथ्वी पर तीन रत्न हैं – जल, अन्न और सुभाषित; मूर्ख लोग ही पाषाण खण्डों को रत्नों का नाम देते हैं।

  — चाणक्य नीति

- भगवान का आश्रय लेने वाले को दूसरे के आश्रय की आवश्यकता नहीं रहती।

  — स्वामी रामसुख दास जी

- किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना वक्त फिजूल न गंवाओ। उसके गुणों को अपनाने की प्रयास करो।

  — कार्ल मार्क्स

- तुम हँसते हुए देखोगे कि सारा संसार तुम्हारे साथ हँसता है, लेकिन रोते समय तुम स्वयं को अकेला पाओगे।

  — विलकाक्स

- कर्म वह दर्पण है जिसमें हमारा प्रतिबिम्ब झलकता है।

  — विनोबा

- सत्य केवल ईश्वर ही है। परलोक में सत्य से जिस प्रकार जीवन का उद्धार होता है। उस तरह यज्ञ, दान और नियमों से नहीं। एकमात्र सत्य ही अविनाशी ब्रह्म है।

  — महाभारत

- प्यार और सत्कार का मूल स्रोत ब्रह्मज्ञान है।

  — निर्मल जोशी

- महान आत्माओं को सर्वदा अल्प सोच वाली मानसिकता का प्रचण्ड विरोध सहना पड़ा है।

  — आगस्टीन्स

प्रस्तुति : ईलू रानी

अपने अरमान ऊँचे रखें

साथियों। आज के आधुनिक दौर में अपना व्यक्तित्व ऐसा बनाएं जिसे तुम्हारे माता–पिता, भाई–बहन, मोहल्ले वाले, कक्षा के सहपाठी भी दिल से पसंद करें और तुमसे मिलने को बेताब रहे। हाँ, यहाँ कुछ ऐसे ही सुझाव प्रस्तुत हैं–

- अपना स्वभाव सदा हँसमुख रखे। बात–बात पर गुस्सा न करें, बल्कि कोई गुस्से भरी बात कहे तो भी गुस्सा न करें और मुस्कराकर सुन लें, और मुस्कराकर मीठा जवाब दे। तुम–अपने इस व्यवहार से परिवार और दोस्तों के बीच बेहद चर्चित और प्रिय बने रहोगे।
- अपने भाई–बहन, कक्षा के मित्रों आदि से कभी ईर्ष्या न करें, सभी से हिलमिल कर प्रेम से रहे, सुख–दुख में उनकी मदद भी करें।
- हमेशा सच व मीठे वचन बोले। घर बाहर सभी जगह बड़ो का सम्मान करें।
- अपना व्यवहार ऐसा रखें कि सभी तुम्हारी प्रशंसा करें, और तुमसे मिलकर खुशी जाहिर करें।
- अपनी सोच कल्पना की उड़ान हमेशा ऊँची ही रखें, ताकि भविष्य में ऊँचा ही पद व कोई कार्य मिल सके और तुम परिवार, समाज और देश के लिए एक गौरव, प्रेरणा और सच्चे मार्गदर्शक बन सको।
- पढ़ाई में सदैव आगे रहें, क्योंकि हर माता–पिता की यह तमन्ना रहती है कि लोग उनके बच्चों की प्रशंसा करें।
- हाँ, अपने माता–पिता से वही मांग करें, जिन्हें पूरा करने में उन्हें कोई कठिनाई न आए, कोई अनुचित मांग करके उन्हें व्यर्थ परेशान न करें।
- हाँ, घर में प्रिय बनने के लिए जितना हो सके घर के कार्यों में बड़ो की मदद करें।
- अपने मौलिक विचारों से दोस्तों को नई प्रेरणा दें। यदि दोस्त गलत रास्ते पर चल रहे हों तो उन्हें समझायें– "ऐसा करना भविष्य के साथ खिलवाड़ हैं, ताकि दोस्त अपनी गलती सुधार सकें।
- टी. वी. के अच्छे सीरियलों से प्रेरणा लें। अपने किसी भी कार्य को सोच समझकर करें। ऐसा करने से तुम्हारे मस्तिष्क की कई बन्द तहें भी खुलेंगी और स्मरण–शक्ति भी बढ़ेगी।
- बाहर दोस्तों के साथ अधिक देर तक गपशप न करे। बाजारू चीजों के चटोरे न बने। कहीं कुछ खा–पीकर रुपये पैसे उधार न करें। यह अच्छी आदत नहीं, हाँ, हमेशा नकद ही लेन–देन करे व साफ सुथरी चीजें खाना पसंद करे।
- फूल चुनकर इकट्ठा करने के लिए मत रूको। आगे बढ़ चलो, तुम्हारे पथ में फूल निरंतर खिलते रहेंगे।

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

दीप जले

बड़े भले दीप जले,
उजले उजले दीप जले।
शाम को करते सुबह,
सुन्दर नजारा यह।

छोटे छोटे पटाखे हैं,
मीच मीच जाती आँखें हैं।
कुछ पटाखे आकाश में,
कुछ टिकुली जैसे पास में।

बड़े पटाखे बड़े चलाते,
कान दोनों ही दबाते।
जोर का धमाका है,
खतरनाक पटाखा है।

अच्छी लगती मिठाई,
मन को बहुत ही भाई।
बाजार भरा मिठाई से,
बस नाता महँगाई से।

बाँटो बधाई त्योहार की,
नया साल सत्कार की।
कैलेण्डर डायरी आई,
ग्रीटिंग रंगोली भाई।

कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

दीवाली त्योहार

दीपक जला चला अंधकार,
रोशनी का हुआ चमत्कार,
रोशन हो गई दसों दिशाएं,
आया दीवाली का त्योहार।

अनार दिखलाए रोशनी फुहार,
चकरी नाचे बारम्बार,
फुलझड़ियों की शोख अदाएं,
लाया दीवाली का त्योहार।

गुझियों की छाई बहार,
गुलाब जामुन पे आया निखार,
पकवानों से महकी फिजाएं,
आया दीवाली का त्योहार।

उमंगित हो उठा संसार,
जगमगाया दीप त्योहार,
लेकर दे दो शुभकामनाएं,
आया दीवाली का त्योहार।

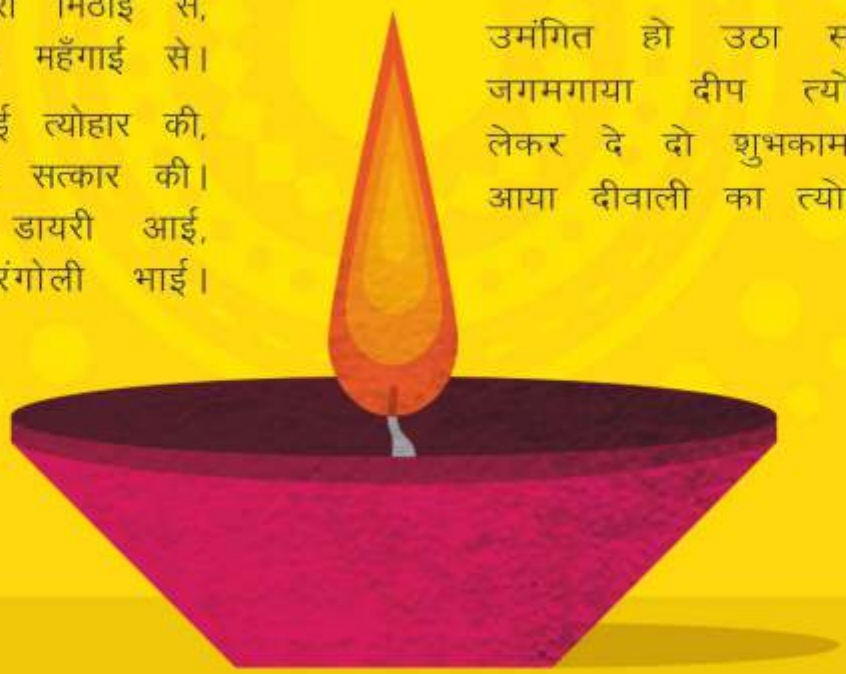

कहानी : अंजु जैन

अंधकार के बदले रोशनी

सोहनपुर के घने जंगलों में खरगोशों की एक बस्ती थी, उमंगपुर। नाम के अनुरूप ही वहाँ सब खरगोश आपस में मिल–जुलकर आनन्दपूर्वक रहते थे। हाँ, एक था 'टिमकू' खरगोश; जो उसी बस्ती में रहता था। वह कुछ अलग ही स्वभाव का था। स्वार्थी तो था ही दूसरों को परेशान करने में भी उसे बड़ा मजा आता था। हमेशा सबकी चुगली इधर–उधर करता रहता था। बस्ती में सभी खरगोश उससे परेशान थे। पर करें क्या? सबने तंग आकर टिमकू से बोलचाल बन्द कर दी। कहते हैं उसकी इन हरकतों ने उसकी माँ को बीमार कर दिया था और अब तो वह बेचारी इस दुनिया में ही नहीं रही। टिमकू अकेला था। दिन भर मटरगश्ती करता और कहीं न कहीं किसी न किसी तरह से अपने खाने–पीने का जुगाड़ भी कर लेता था।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी उमंगपुर के निवासियों में दिपावली का त्यौहार मनाने का

उत्साह बहुत था। काफी समय पहले से ही सब तैयारियों में लग गये थे। दीपावली का पर्व सब खरगोश मिलकर हँसी–खुशी मनाते थे। एक–दूसरे के घर भी जाते थे, बधाई देने।

और हाँ, टिमकू का जो काम दीवाली पर होता था ... किसी खरगोश के बच्चे की पूँछ में पटाखे बांध देना, वह किसी खरगोश के पास पटाखों की लड़ी में आग लगाकर फेंक देता और कभी किसी के घर से मुंडेर पर जल रहे दीपकों को उठाकर कहीं और रख आता। सभी जीव उसकी इन हरकतों से तंग थे पर करें क्या... कोई था ही नहीं उसके परिवार में... किससे उसकी शिकायत करें। कोई–कोई तो उसकी पिटाई भी कर देता था। पर वह कहाँ बाज आने वाला था। ढीठ जो बन चुका था।

पर इस बार टिमकू दीपावली से एक दिन पहले बीमार पड़ गया। बीमार भी इतना कि उठा भी नहीं जा रहा था। उसे कमजोरी काफी आ गयी थी। बुखार के कारण बस्ती भर में जहाँ खुशियाँ मनायी जा रही थी, पटाखे, फुलझड़ियाँ छोड़ी जा रही थी, बेचारा टिमकू खाट पर अकेला पड़ा कराह रहा था। उसके गलत व्यवहार के कारण कोई उसकी खबर तक लेने नहीं आया। वह भूखा–प्यासा पड़ा रोता रहा।

दीपावली के दिन भी उसके घर में अंधकार था। उसमें न तो हिम्मत थी कि वह उठकर एक दीपक तक जला सके और न ही साधन था कि कहीं से दीपक जुटा सके।

मन ही मन वह पछता रहा था कि काश! उसने बस्ती में सबसे अच्छा व्यवहार किया होता तो उसे त्यौहार वाले दिन इस तरह अकेले न पड़े रहना पड़ता। सब उसका हालचाल पूछने आते।

वह सोच ही रहा था कि अचानक उसने कुछ आहट सी सुनी... अरे ये तो मनकू खरगोश था जो उसके पड़ोस में ही रहता था।

अरे टिमकू यह क्या? आज त्यौहार के दिन भी घर में अंधेरा! क्या बात है भई?

– मैं बीमार हूँ, उठ नहीं सकता।– टिमकू धीरे से बोला।

– हाँ मैं भी सोच रहा था कि तुम्हारे घर में आज कैसे सुनापन व अंधेरा है। कल से तुम दिखे भी नहीं। मैंने सोचा जरूर कोई गड़बड़ है। चलकर देखना चाहिए।

खैर मैं अभी आता हूँ। थोड़ी देर में मनकू लौटा, उसके हाथ में दीपक व कुछ खाने–पीने

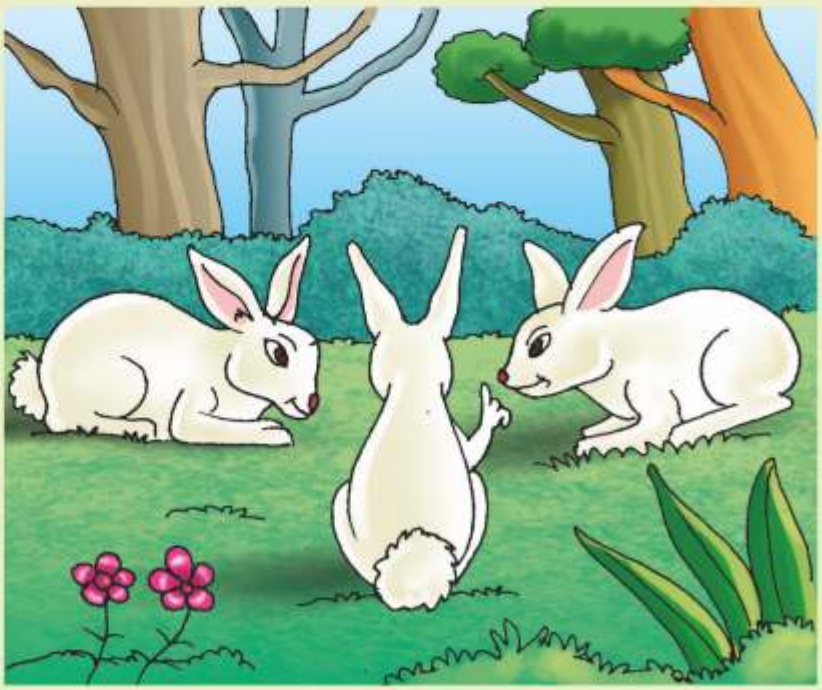

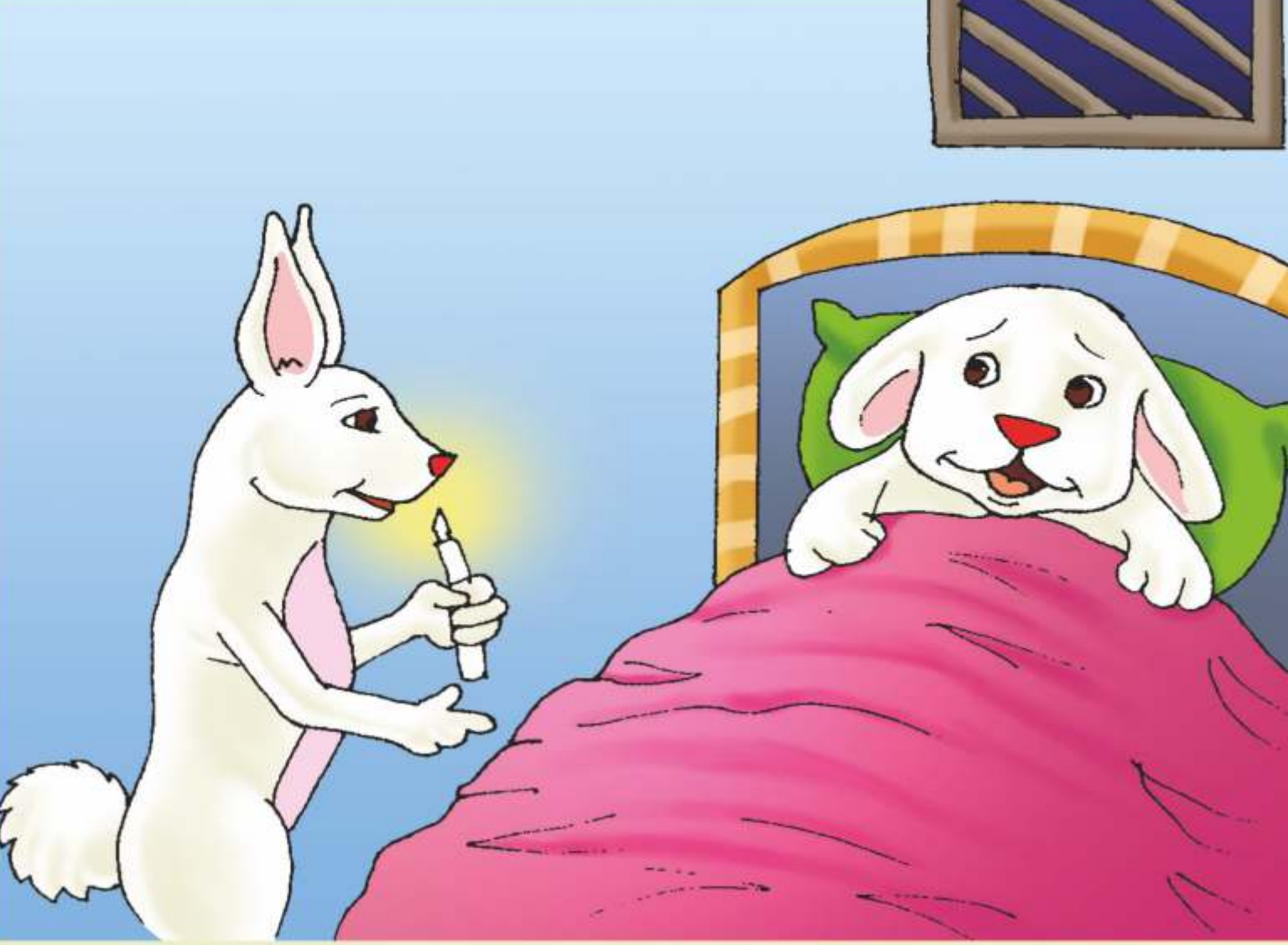

में दीपक। हाँ, सुबह से तुमने खाया–पिया भी नहीं होगा। लो खा लो कुछ।

– तुम... क्यों इतना कर रहे हों मेरे जैसे बुरे स्वभाव वाले के साथ। मैंने तो पिछले वर्ष तुम्हारी मुंडेर पर जल रहे दीपकों को उठाकर कहीं ओर रख दिया था। मैंने तुम्हारे घर में अंधकार किया और तुम मेरे घर को उजाले से भर रहे हो। कहते–कहते रो पड़ा था टिमकू।

– नहीं, दोस्त रोते नहीं, मैं तुम्हारा पड़ोसी हूँ। फिर ये कैसे देख सकता है कि मेरा घर तो प्रकाश से जगमगाये और तुम्हारा घर अंधकार में डूबा रहे।

– मुझे माफ कर दो दोस्त... मुझे माफ कर दो, अब भविष्य में मैं अच्छा बनने की कोशिश करूँगा, कभी भी बुरे काम नहीं करूँगा।

– दोस्त, अंधकार के बदले तुमने जो रोशनी दी है उसने मेरे घर के साथ–साथ मेरे मन को भी प्रकाशवान कर दिया है।

– सच।

– हाँ, सच बिल्कुल सच। अब मुझसे किसी को कोई शिकायत नहीं रहेगी।– आँखों के आंसुओं को पोंछते हुए टिमकू ने कहा।

जानकारी पूर्ण लेख : जयेन्द्र

मकड़ियों की अजब अनोखी दुनिया...

संसार भर में मकड़ीयों की कई प्रजातियां पाई जाती हैं। ये मकड़ियां कई रंगों व कई आकृतियों में दिखाई देती हैं। दक्षिण अफ्रीका के अन्धेरे जंगलों में नीले वर्ण की एक अनोखी मकड़ी पेड़ों पर रात के घनघोर अन्धेरे में जब जाला बुनती है तो अपने शरीर से नीला–पीला प्रकाश छोड़ती रहती है, और जाला बुनती रहती है। ऐसी ही एक मकड़ी कोरिया के जंगलों में पाई जाती है, जिसे 'बिजली' नाम से जाना जाता है, इसे छूने पर हल्का सा करंट का झटका लगता है तथा यह भी रात्रि में अपने बदन से प्रकाश उत्पन्न कर नन्हें कीट पतंगों के शिकार करती है।

उष्णकटिबंधीय प्रदेशों में पाई जाने वाली 'सिरिकिया' मकड़ी के जाले बड़े अनूठे और बड़े होते हैं। इसके जाले एरियलनुमा गोलाई जैसे लगते हैं। इसकी परिधि 57.3 सें.मी. तक नापी गई है। सबसे छोटा जाला 'गलाइफेसिरा काटरी' मकड़ी का होता है। इस जाले का आकार 480 वर्ग मि.मी. होता है। इसमें एक और खासियत होती है। मकड़ी की टांग टूटने पर उसकी खाल के भीतर से नई टांग उग जाती है, जो मकड़ी के केचुल (काचली) उतारने के साथ ही बाहर आ जाती है।

मलेशिया के दलदली जंगलों में 'ऐराफन' नामक श्याम मकड़ी पाई जाती है, जिसकी 5 आँखें और 13 टांगें होती हैं। यह अक्सर पेड़ों पे चिपटी रहती हैं। यह चार इंच लम्बी होती है। इसका मुख्य भोजन जहरीले कीट पतंगे है।

चिली में 'दर्रा' प्रजाति की कत्थई मकड़ी पहाड़ियों पर दिखाई देती हैं। यह जालें नहीं बुनती बल्कि अपनी लार का उपयोग नन्हें कीट पतंगों के शिकार के लिए करती है।

'फोन्यूट्रिया' मकड़ी सबसे जहरीली तथा घुमक्कड़ होती है। यह साईबेरिया के जंगलों में दिखाई देती है। यह अक्सर 8–10 के समूह में रहती है।

संसार की सबसे बड़ी मकड़ी 'थराफोसा लेब लाण्डी' है। इसके पांवों की अधिकतम लम्बाई 36.5 सें.मी. और वजन 250–275 ग्राम के लगभग होता है।

संसार की सबसे छोटी मकड़ी पश्चिमी मनोआ में पायी जाती है। इसकी आकृति मक्खी जैसी होती है।

केनिया के जंगलों में एक अनोखी मकड़ी पाई जाती है, जिसके सिर पर सात आँखें होती हैं। मुँह के दोनों तरफ दो तेज कांटे होते हैं। ये कांटे अन्दर से पोली नली की भांति होते हैं। इन नलियों में द्रव्य भरा होता है। मकड़ी अपने शिकार को इन्हीं कांटों से पकड़ लेती है और शिकार को घायल कर देती है। इसकी पोली नलियों से लार निकलती है जो शिकार के आसपास एक जाल सा बना देती है। इस जाल में फसने के बाद मक्खी–मच्छर या कीड़ा उड़ नहीं पाता। इस तरह मकड़ी शिकार का रस और नरम भाग चूसती है। इसके भोजन करने की एक विशेषता यह भी है– एक बार में ही अधिक से अधिक भोजन लेती है और फिर कई दिनों तक आराम करती रहती है।

बाल कहानी : फारुख हुसैन

यादगार दिवाली

आज जब पीयूष को पता चला कि दिवाली आने वाली है तो वह सोच में पड़ गया। तभी उसके दोस्त पिंटू, नन्हीं, रॉकी उसके पास आ गये।

"क्या हुआ पीयूष क्या सोच रहे हो?" पीयूष को सोच में डूबा देखकर पिंटू ने पीयूष से पूछा।

"तुम लोग तो जानते हो दिवाली आने वाली है लेकिन मैं सोच रहा हूँ कि हम लोग हर बार की तरह इस बार दिवाली नहीं मनायेंगे। हर बार हम लोग पटाखों में कितना पैसा बर्बाद करते हैं और अब तो जबसे हम लोग मोबाइल रखने लगे हैं तब से हम इंटरनेट पर भी बहुत पैसा बर्बाद करने लगे हैं। कभी 'व्हाटस एप' पर तो कभी 'फेसबुक' पर। लेकिन इस बार हम ऐसा कुछ नहीं करेंगे।" पीयूष ने सभी से कहा।

"हाँ, यह तो तुम सही कह रहे हो हम लोग बेवजह बहुत पैसा बर्बाद कर रहे हैं। लेकिन इन सबसे दिवाली का क्या सम्बन्ध है।" नन्हीं ने बहुत ही गम्भीरता से पूछा।

"इस बार हम लोगों की दिवाली बिल्कुल अलग होगी। हम आज से ही अपना फालतू का खर्चा बंद कर देंगे और उन रुपयों को जमा करेंगे।" पीयूष ने सभी से कहा।

"हाँ! लेकिन हम इन रुपयों का क्या करेंगे।" रॉकी ने पीयूष की हाँ में हाँ मिलाते हुए पूछा।

"तुम लोग तो जानते हो हमारी कालोनी के पास की बस्ती में कितने गरीब बच्चे रहते हैं जिनको हमने कभी कोई त्योहार मनाते नहीं देखा। इसलिए इस बार मैं सोच रहा हूँ कि इस दिवाली में हम उन गरीब बच्चों की सहायता करेंगे और उन्हीं के साथ दिवाली भी मनायेंगे।" पीयूष ने सभी दोस्तों से कहा।

पीयूष की बात सुनकर सभी बहुत खुश हुए।

"अगर हम चाहें तो एक काम और हो सकता है।" रॉकी ने कुछ सोचते हुए सभी से कहा।

"हम समझे नहीं।" रॉकी की बात सुनकर

तीनों एक साथ बोले।

"मैं सोच रहा हूँ कि अगर वे बच्चे पढ़ाई भी करने लगे तो क्या बात होगी और फिर उनका भविष्य भी सुधर सकता है।" रॉकी बोला।

"हाँ यह तो तुम सही कह रहे हो, मगर उसके लिये तो बहुत पैसा चाहिये और फिर हम चारों मिलकर पैसा जमा करे फिर भी इतना पैसा नहीं जमा कर पायेंगे।" पिंटू बोला।

उसकी बात सुनकर सभी सोच में पड़ गये कि क्या किया जाये तभी नन्हीं को एक उपाय सूझ गया।

"क्यों न हम यह बात पूरी कालोनी के बच्चों को बताये अगर वे इस काम के लिये राजी हो गये तो समझो काम बन गया।" नन्हीं मुस्कुराती हुई बोली।

बस उसी समय वे सभी तुरन्त कालोनी के बच्चों से मिलने जा पहुँचे और वे सभी को अपनी योजना समझाने लगे। पहले तो वे ना–नकुर करते रहे लेकिन फिर वे मान गये। धीरे–धीरे दिवाली भी आ गयी।

दिवाली के दिन चारों बहुत व्यस्त रहे उन्होंने जमा किये रुपयों से उन गरीब बच्चों के लिये मिठाई और कपड़े खरीद लिये और फिर उन्होंने किताबें भी खरीद ली। फिर सभी बस्ती पहुँच गये और सभी मिलकर बच्चों को कपड़े मिठाई और किताबें बांटने लगे।

उधर जब उनके मम्मी–पापा को पता चला तो वे लोग भी बस्ती में आ गये। वे खुश थे कि उनके बच्चे इतना अच्छा काम कर रहे हैं। तभी पीयूष के पापा जो एक अध्यापक थे उन्होंने भी उनकी सहायता करने के लिये घोषणा कर दी कि वे रोज एक घंटे इन बच्चों को पढ़ायेंगे। यह घोषणा सुनकर सभी बहुत खुश हुए।

उधर पीयूष और उसके दोस्त भी खुश थे कि इस बार उनकी दिवाली एक यादगार दिवाली बन गयी थी।

■

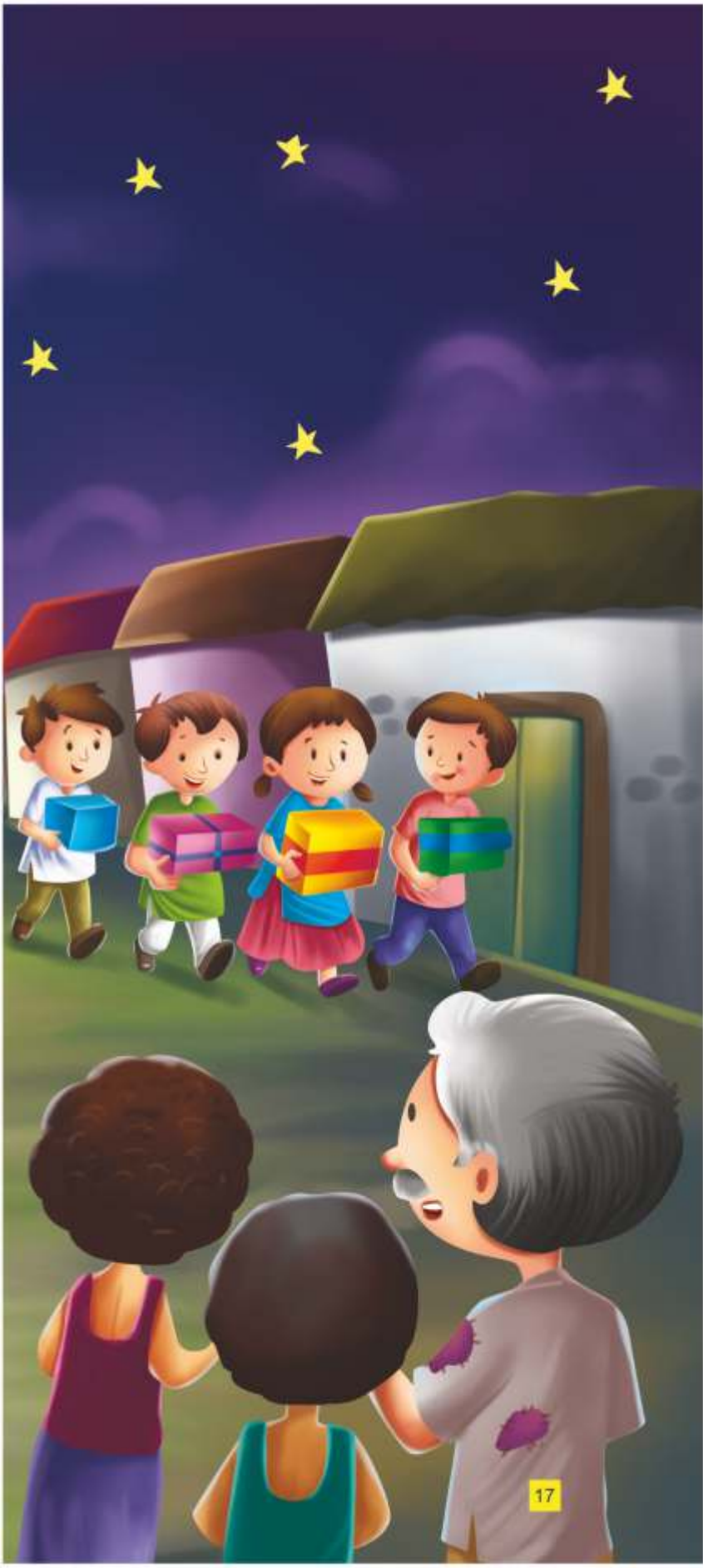

विज्ञान लेख : अर्चना सौगानी

चंद्रमा और मंगल

ग्रह पर फलों-सब्जियों की खेती

आपको जानकर अचरज होगा, भविष्य में चंद्रमा, मंगल पर फल और सब्जियां उगने लगेंगे। इस संदर्भ में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने पहल की है।

नासा दूसरे ग्रहों पर जीवित रहने लायक वातावरण बनाने के उद्देश्य से कृषि क्षेत्र में अभिनव प्रयोग कर रहा है। ताकि भविष्य में चंद्रमा और मंगल ग्रह पर मानव बस्तियां बसाई जा सके। इस महत्वाकांक्षी योजना को अमलीजामा पहनाने के लिए नासा ने प्रतिकूल जलवायु में 'कंट्रोल्ड इकोलाजिकल लाइफ सपोर्ट सिस्टम सेल्स' के तहत मिट्टी, हवा और पानी के बगैर पौधे उगाने की तकनीकी 'ऐयरोपोनिक्स' पर शोध शुरू कर दिया है। फ्लोरिडा के 'ओरलैंडो' स्थित एपकाट में बनाए गये विशेष ग्रीन हाउस में हवा में झूलते पौधों में रसीले लाल टमाटर, हरे टिंडे, करेले, तोरी, बैंगन और खुशबू बिखरते गुलाब देखकर आप हैरान रह जाएंगे। यहाँ उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों से लेकर रेगिस्तानी इलाकों और ध्रुवीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली वनस्पतियां उगाई जा रही हैं। ग्रीन हाउस में हवा का दबाव, तापमान, प्रकाश व्यवस्था सभी कुछ कम्प्यूटर संचालित है।

नासा के वैज्ञानिक सर जैफ रिचर्ड के अनुसार यह तकनीक दीर्घकालीन अंतरिक्ष अभियानों और अन्य ग्रहों पर मानव बस्तियां बसाने के क्रम में बेहद उपयोगी साबित होंगी। इस तकनीक के अंतर्गत पौधे मिट्टी में अपनी जड़े जमाए बगैर फल–फूल और सब्जियां पैदा करते हैं। इसके लिए ग्रीन हाउस में बड़े–बड़े स्टील के खंभों पर प्लास्टिक और स्टील की महीन जाली बिछाई गई हैं। पौधों को इन जालियों के ऊपर फैला दिया जाता है। उनके तने जालियों के ऊपर फैला दिये जाते हैं। उनके तने जालियों के छिद्र में एक खास किस्म की तश्तरी के सहारे टिके रहते है, और पौधे की जड़ें जालियों के नीचे हवा में झूलती रहती है। जड़ो तक पोषक तत्व पहुँचाने के लिए इन पर पोशक घोल का छिड़काव किया जाता है। पोषक तत्वों को अवशोशित करने के लिए आक्सीजन और प्रकाश पहुँचाने की कृत्रिम व्यवस्था की गई है।

वैज्ञानिकों के मुताबिक सघन प्रकाश की स्थिति में पौधे काफी घने होने के साथ ज्यादा बड़े आकार के फल–फूल देते हैं। यही कारण है कि यहाँ 20 किलो के सीताफल, 15 किलो के कटहल पांच फुट ऊंचे पेड़ों पर उग रहे हैं।

मंगलयान ने भेजी 'वैलिस मरीनेरिस' की 3डी तस्वीरें

श्रीहरिकोटा। भारत के मार्स ऑर्बिटर मिशन मंगलयान ने वैलिस मरीनेरिस की तस्वीरें भेजी हैं। भारत के मंगलयान ने मंगल ग्रह पर मौजूद सौरमंडल की सबसे बड़ी घाटी 'वैलिस मरीनेरिस' की तीन आयामी यानी थ्री डाइमेंशनल तस्वीरें भेजी हैं।

लाल ग्रह यानी मंगल की सतह से 1857 किलोमीटर की ऊंचाई से मंगलयान ने अपने खास रंगीन कैमरे से जिस हिस्से की तस्वीरें खींची हैं, उसे 'ओपिर चस्मा' कहते हैं। 'ओपिर चस्मा' मंगल ग्रह पर मौजूद सोलर सिस्टम की सबसे बड़ी घाटी का हिस्सा है। वैलिस मरिनेरिस करीब 5000 किलोमीटर लम्बी है। इसमें कई घाटियां हैं और 'ओपिर चस्मा' 62 किलोमीटर चौड़ा है और ऊंची चट्टानों से घिरा हुआ है।

मंगलयान को अंतरिक्ष में 5 नवम्बर, 2013 को भेजा गया था। इस पर 450 करोड़ रुपये की लागत आई है। मंगलयान को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से प्रक्षेपित किया गया था।

(एजेंसी)

इस तकनीक के अंतर्गत पीड़ित मिट्टी में अपनी जड़े जमाए ट्रेसिया फलेक्सुलगा और बहुविजयी पौधों की आग लगी। यहाँ तक कि जेल कैदी भी इसके लिए धीमे हो गए और बड़े-बड़े बुझाने लगे। आग बुझ जाने पर स्टील की खंभों पर प्लास्टिक और स्टील की महीन जाली बिछाई गई है। पौधों को इन जालियों के ऊपर फैला दिया जाता है। उनके तने जालियों के ऊपर फैला दिये जाते हैं। उनके तने जालियों के छिद्र में एक खास किस्म की तश्तरी के सहारे टिके रहते है, और

कैदियों ने कहा—हम अपनी सरकार व कानून के प्रति वफादार हैं, हम ऐसा कोई काम नहीं कर सकते जिससे न्याय व्यवस्था बिगड़े। वह व्यक्ति उनकी सिद्धान्त निष्ठा से बहुत प्रभावित हुआ।

प्रस्तुति : बबलू कुमार

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : भारतभूषण शुक्ल

- किसी से ईर्ष्या नहीं करनी बल्कि सभी से प्यार करना चाहिए।
- हमें जो भी चाहे मुस्कुराहट के बल से प्राप्त करना चाहिए न कि तलवार से।
- व्यर्थ कर्म भारीपन व थकान लाते हैं जबकि श्रेष्ठ कर्म हमें प्रसन्न व हल्का बनाकर ताजगी प्रदान करते हैं।
- विश्व–शान्ति का अध्यात्म ही एक–मात्र साधन है।
- जीवन के माधुर्य का रस लेने के लिए हमें बीती बातों को भूला देने की शक्ति अवश्य धारण करनी है।

- जो प्रसन्न रहते हैं, उनके मन में कभी आलस्य नहीं आता। आलस्य एक बहुत बड़ा विकार है।
- महान वही है जो महान गुरुओं, अवतारों के आदेशों को अपने जीवन में ढालता है। उन महापुरुषों की महानता का केवल वर्णन करने से कोई महान नहीं बन सकता। वे हमारे महापुरुष महान तो थे ही वे ज्यादा महिमा गाने से ज्यादा महान या कम महिमा गाने से कम महान नहीं हो जायेंगे। हमें उनके आदेशों पर चलकर स्वयं महान बनना है।
- किसी को पीड़ा पहुँचाना एक पेड़ को कुछ क्षणों में काटने के समान बहुत आसान सा कार्य है लेकिन किसी को सुखी करने के लिए एक पेड़ लगाने के समान धैर्य, समय और सतर्क होकर देखभाल करने की आवश्यकता होती है।
- विजेता वे लोग नहीं हैं जो कभी पराजित नहीं हुए बल्कि विजेता वे हैं जिन्होंने हार के डर से मैदान छोड़ देने की गलती नहीं की।
- परमानन्दमय जीवन की असली नींव सन्तुलन है। यह ध्यान में रखने से आपका वर्तमान तथा भविष्य निश्चय ही सदा उज्ज्वल रहेंगे।
- आत्मोन्नति के लिए अधिक से अधिक समय लगायें तो दूसरों की आलोचना करने का समय ही नहीं मिलेगा।
- शाख से टूट कर गिरे हुए फूल दोबारा नहीं खिल सकते लेकिन यदि जड़ें मजबूत हों तो शाखाओं पर नये–नये फूल खिल आएंगे। इसी तरह जीवन वह नहीं जो हमने अभी तक प्राप्त किया बल्कि जीवन वह है जो हम अब भी प्राप्त कर सकते हैं।
- दूसरों को पहुँचाये गये दुःख की मैल गंगा भी नहीं धो सकती।

– निरंकारी बाबाजी

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर **'श'** अक्षर पर खत्म होते हैं। पैन या पैन्सिल उठाइए और प्रश्नचिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

1. किस भारतीय राज्य की राजधानी शिमला है?
2. भगवान श्रीराम के वंश का क्या नाम था?
3. उत्तराखंड राज्य पहले किस राज्य का हिस्सा था?
4. सन् 1971 में भारत–पाकिस्तान युद्ध के बाद किस नये देश का निर्माण हुआ?
5. प्रसिद्ध झूला पुल 'लक्ष्मण झूला' किस शहर में स्थित है?
6. रजिया बेगम किस मुस्लिम शासक की बेटी थी?
7. भारत के किस राज्य का पुराना नाम 'नार्थ ईस्ट फ्रन्टियर एजेन्सी' था?
8. भगवान शिवजी के किस पुत्र का सिर हाथी का है?
9. किस भारतीय राज्य की मुख्य भाषा तेलुगू है?
10. प्रसिद्ध पर्यटन स्थल चंबा और डलहौजी किस भारतीय राज्य में है?
11. किस देश की संसद का नाम 'जातीय संसद' है?
12. भोपाल किस भारतीय राज्य की राजधानी है?
13. सर्वश्रेष्ठ गायक का पहला फिल्म फेयर पुरस्कार 1962 में फिल्म 'अनाड़ी' के लिए किस गायक को मिला था?
14. किस भारतीय राज्य में सबसे ज्यादा 80 लोकसभा क्षेत्र है?
15. किस पर्वत पर भगवान शिवजी का निवास माना जाता है?

(सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

जीव-जंतु

लेख : दीपांशु जैन

शानदार सींगों वाला बारहसिंगा

बारहसिंगा अपने सुंदर और शानदार सींगों के कारण अन्य हिरणों से अलग पहचान रखते हैं। इनका परिवार काफी बड़ा है और इनकी अनेक प्रजातियां हमारे देश में पाई जाती हैं। उत्तरी गोलार्द्ध के रेडियर को छोड़कर देश सभी बारहसिंगों में नर के सींग बड़े होते हैं। इस परिवार के अन्य बारहसिंगों में हांगुल, सांभर, चीतल, पाढ़ा, काकड़ व कस्तूरी मृग हैं। बारहसिंगा (स्वाम्प डियर) को दलदली हिरण भी कहा जाता है।

बारहसिंगा का नाम आते ही हमारे दिमाग में एक विशालकाय जानवर की तस्वीर उभरती है। आम धारणा यह है कि इसका नाम बारहसिंगा इसलिए है क्योंकि इसके 12 सींग होते हैं। दरअसल इसके मूल सींग तो दो ही होते हैं पर इनकी शाखाएं 12 होती हैं और यह भी जरूरी नहीं है कि ये पूरी 12 ही हो। 12 से कम भी होती हैं और अधिक भी। अधिक से अधिक 17 शाखाओं वाले मृग भी देखे जा सकते हैं।

बारहसिंगे की औसतन ऊंचाई 135 सेंटीमीटर तथा भार 170–180 किलोग्राम के मध्य होता है। लम्बे–चौड़े शारीरिक ढांचे के कारण इनका वजन भी अधिक होता है। कभी–कभी वजन में ये षेर को भी मात करते हैं। इसके सींग 75 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं, जिनकी परिधि 13 सेंटीमीटर होती है। इसके प्रत्येक सींग में शाखाएं फूटी रहती हैं।

बारहसिंगा मृग की नस्ल भारत से बाहर भी मिलती है। पहले–पहल यह नस्ल स्कॉटलैण्ड के जंगलों में देखी गयी। न्यूयार्क के ज्योलॉजिकलपार्क में भी बारहसिंगे उपलब्ध हैं। उन देशों में इन्हें रेड डियर (लालमृग) कहते हैं। भारतीय तथा विदेशी बारहसिंगों के शरीर और सींगों की रचना मिलती–जुलती है। हाँ, हल्का–सा रंग भेद अवश्य है।

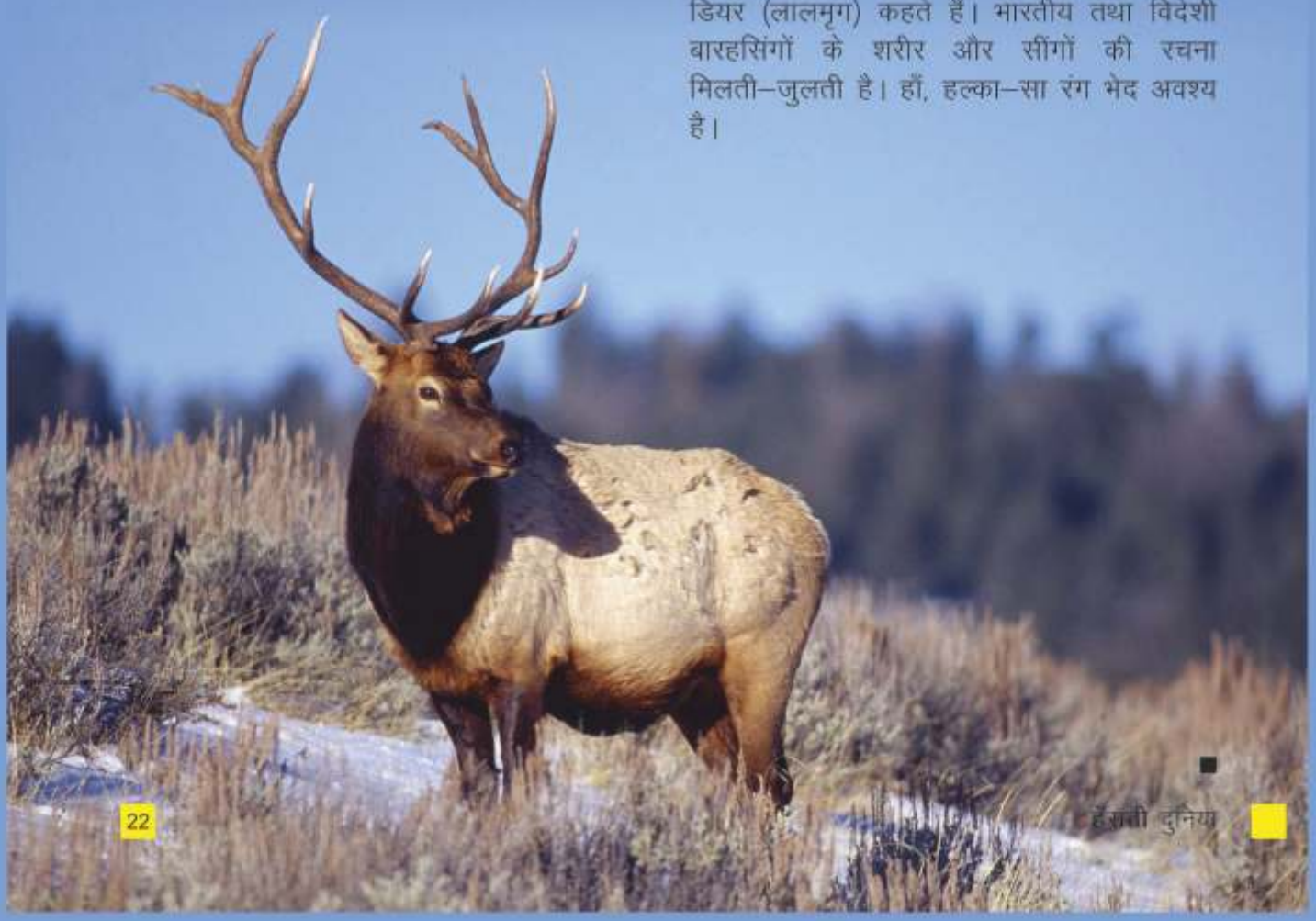

बारहसिंगा बहुत सुडौल होता है। इसके शरीर के बाल कड़े और मोटे होते हैं, जो गर्दन के पास काफी लम्बे हो जाते हैं। इसके बालों का रंग भूरे से लेकर पीला–भूरा होता है। यह झुण्ड में रहने वाला जानवर है, जो गर्मियों में अकेले रहना पसंद करता है, लेकिन जाड़ों में इनके बड़े–बड़े झुण्ड बन जाते हैं। ये दलदली भूमि वाले जंगल और घास के मैदानों में रहना पसंद करते हैं।

इनका रंग मूलतः भूरा ही होता है। इनकी चमड़ी का रंग ऋतुओं के अनुसार हल्का और गहरा होता है। नरों का रंग मादाओं से अधिक गहरा भूरा होता है। परन्तु पीठ से पेट तक पहुँचते–पहुँचते इनका रंग हल्का होता जाता है। पांवों और पूंछ का भीतरी भाग मटमैला सफेद होता है। समय–समय पर इनके सींग गिरते रहते हैं। मौसम के प्रभाव के कारण भिन्न–भिन्न स्थानों पर सींग गिरने के समय में भिन्नता पाई जाती है। गर्मियों में ही इनके सींग पकते है। इनके सींगों की खूबसूरती उनकी अधिकता और मूल शाखाओं की लम्बाई के आधार पर आंकी जाती है।

आज से कुछ वर्ष पहले तो बारहसिंगे भारत के विभिन्न प्रदेशों में पाये जाते थे। अब तो ये उत्तर भारत के खीरी जिले के पश्चिमी भाग तक ही सिमटकर रह गये हैं।

जहाँ बड़ी–बड़ी घास उगी हुई हो, जहाँ सूखी और कड़ी मिट्टी में वृक्ष उगे हुए हों, ऐसा ही क्षेत्र इन्हें पसंद है। इन्हें तेज ढलुआ जमीन पसंद नहीं है। एक तो इसकी गर्दन पर, जो पुश्ट और बालों से ढकी हुई होती है, बड़े–बड़े सींगों का भार पड़ा होता है और दूसरा, शरीर से भी भारी होने के कारण ये दौड़ नहीं पाते। अपनी सुरक्षा हेतु भी तेज ढालों की पहाडी जमीनें ये पसंद नहीं करते।

बारहसिंगा घुम्मकड़ जीव नहीं है। यह जिस टुकड़े में रहते है, वहीं अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर देते हैं। हजार बारह सौ फुट में घूमते रहना ही इनकी सीमा है। क्योंकि जिस प्रकार की दलदली घासों से भरा इलाका इन्हें पसंद है, वैसा स्थान इतनी आसानी से उपलब्ध नहीं होता।

बारहसिंगा प्रायः झुण्ड में ही रहते हैं। ये अक्सर रात्रि में विचरण नहीं करते और सुबह देर तक

व शाम को चराई करते हैं। दिन में आराम करते हैं। इनकी नजर व श्रवण शक्ति कमजोर होती है परंतु घ्राण शक्ति काफी तेज होती है।

सूर्योदय या उससे कुछ पहले दिन चढ़ने तक ये बाहर मैदान में चरने निकलते हैं। उसके बाद विश्राम के लिए अच्छे घने तथा छायादार वृक्षों के नीचे अपने आप में मस्त, झुण्ड बनाकर मस्त–मस्त चाल से टहलते हुए चले जाते हैं। ये या तो पेड़ों के नीचे बैठ जाते हैं या चुपचाप खड़े रहते हैं। विश्राम की स्थिति में ही जुगाली करते हैं। यह अपने चिबुक को जमीन पर टिका आंखें बंद कर मस्त होकर जुगाली करते हैं। गर्मियां इन्हें भी सताती हैं। गर्मी से तंग आकर यह अपने चौड़े–चौड़े कानों को पीछे इस अंदाज में हिलाते हैं, मानो पंखा झल रहे हो।

मौसम के अनुसार इनका रंग बदलता है। जाड़ों में इनका ऊपरी हिस्सा बादामी रहता है, तो गर्मियों में खैरा हो जाता है और उस पर अक्सर सफेद चित्तियां पड़ जाती हैं। इसका पेट, गला और टांगों का भीतरी हिस्सा सफेद या मटमैला होता है। दुम के नीचे का हिस्सा हमेषा सफेद होता है।

बारहसिंगों की सूंघने की शक्ति बहुत तेज होती है जिस स्थान से षेर या षेर की नस्ल का कोई जानवर जा रहा हो या जा चुका हो, वहाँ पहुँचते ही ये उसकी महक को पकड़ लेते हैं। ऐसे में ये या तो चौकन्ने हो जाते हैं या भाग खड़े होते हैं। बारहसिंगा जब स्वयं को खतरे में पाकर सचेत होता है तो यह अपनी गर्दन सीधी कर कान खड़े कर लेता है तथा सूंघने की कोशिश करता है। ऐसा करते हुए यह गर्दन आकाष की ओर उठा लेता है तथा इसकी दुम भी खड़ी हो जाती है। भयग्रस्त होने पर यह पांव पटकने लगता है तथा खतरे को अत्यंत निकट जानकर चिल्ला भी पड़ता है।

इनका मुख्य भोजन घास–पात है। कभी–कभी दो बारहसिंगों की लड़ाई में उनके सींग इस प्रकार से जकड़ जाते हैं कि वे किसी भी तरह नहीं छुड़ा सकते और आखिर में दोनों गिरकर मर जाते हैं। इस जाति के हिरण का बच्चा पैदा होने के कुछ ही घंटे बाद पानी में तैर सकता है।

यह स्वभाव से हिंसक जीव नहीं है। इनके आपस में खून–खराबे तक की नौबत नहीं आती है।

क्रुद्ध होने पर यह अपने प्रतिद्वंद्वी की ओर सीधे आक्रामक होकर सिर को एक विषेश प्रकार से झटका देता हुआ सींगों को नीचे कर विपक्षी की ओर बढ़ता है, या सिर झुकाकर आगे के पैर पटकने लगता है और यह धीरे–धीरे प्रतिद्वंद्वी के चारों ओर घूमकर उसके बराबर या सामने आकर खड़ा हो जाता है। दूसरा भी यही भाव दिखाता है। दोनों को एक–दूसरे की शक्ति का अंदाज हो जाता है। बात यहीं समाप्त हो जाती है। अगर बात बढ़ती है तो ये अपने सींग आपस में उलझाने की बजाय एक दूसरे के शरीर में चुभाने के, जमीन में गाड़ देते हैं। एक दूसरे से गुंथ जाने की नौबत कम ही आती है। कभी–कभी एक–आध मिनट के लिए माथों को मिलाकर एक दूसरे की गर्दन को मोड़ने का प्रयास करते हैं। बहुत देर तक लड़ते हुए इन्हें नहीं देखा गया है।

इनके सौंदर्य का एक अद्भुत नजारा देखने को मिलता है, जब ये बड़े–बड़े सींगों को घास की जड़ों में घुसा देते हैं तथा उनके सहारे जड़ों समेत घास के गुच्छे के गुच्छे अपनी सींगों पर उठा लेते हैं और घास को सींगों पर सजाये गर्व से घूमते हैं।

बारहसिंगा यूरोप के बहुत से स्थानों और एशिया के उत्तरी भाग में पाए जाते हैं। भारत में हिमालय की तराई, उत्तर प्रदेष, असम एवं सुन्दर वन में देखा जा सकता है। बारहसिंगा संकटग्रस्त प्राण्यिों में से है। मध्य भारत में इनकी संख्या 200 से भी कम है। इसके बचाव के लिए कड़ी सुरक्षा एवं जन–जाग्रति की आवश्यकता है।

■

बाल कविता : हरजीत निषाद

मंगलमय दीवाली आई

मंगलमय दीवाली आई।
घर घर में खुशहाली छाई।
रौनक और बहारें लाई।
सुख देने वाली दीवाली आई।

धूम–धाम है बाजारों में।
रौनक टीवी अखबारों में।
आंगन राहों गलियारों में।
नगर गाँव घर चौबारों में।

जलती लड़ियां रंग बिरंगी।
लाल हरी नीली नारंगी।
दूर हुई बदहाली तंगी।
हर घर में खुशियां सतरंगी।

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

1. हिमाचल प्रदेश की 2. रघुवंश 3. उत्तर प्रदेश का 4. बांग्लादेश का 5. ऋषिकेश में 6. इल्तुतमिश की 7. अरुणाचल प्रदेश का 8. गणेश जी का 9. आन्ध्र प्रदेश की 10. हिमाचल प्रदेश में 11. बांग्लादेश की 12. मध्य प्रदेश की 13. मुकेश को 14. उत्तर प्रदेश में 15. कैलाश पर्वत पर।

लालच का फल

लोककथा : मो. साबिर खान 'संजर'

एक जंगल में चार चोर घोड़ों पर सवार होकर घूम रहे थे। तभी उनको कोई उनकी तरफ भागता हुआ दिखाई दिया, जैसे ही वह पास आया चोरों ने देखा वे एक साधु महात्मा थे। बाल और दाढ़ी बिखरे हुए थे। वे हाँफ रहे थे। चोरों ने पूछा– क्या बात है बाबा, आप हाँफ क्यों रहे हैं?''

महात्मा बोले– ''उस तरफ मत जाना। आगे मौत खड़ी है।''

इतना कहकर महात्मा वहाँ से चले गये।

चोरों ने सोचा चलो देखा जाए। फिर वे चारों उस तरफ चल दिये, जहाँ से वह महात्मा आए थे। आगे जाकर चोरों ने देखा कि जंगल में एक झोपड़ी बनी हुई है, वे चारों घोड़ों से उतर कर झोपड़ी के अंदर गये तो देखा कि झोपड़ी में सोने के टुकड़े बिखरे हुए थे। उन्होंने सोने के टुकड़ों को उठाया और एक पोटली बना ली और वापस लौटने लगे।

रास्ते में उन्हें भूख लगी। एक चोर बोला– ''तुम दो आदमी बाजार से खाना ले आओ, हम दोनों रखवाली करेंगे, खाना खाकर बंटवारा कर लेंगे।''

दो चोर घोड़ों पर सवार होकर खाना लेने बाजार की तरफ चले गये। इतना सोना उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। दो चोर जो रखवाली कर रहे थे, उनके मन में लालच आ गया।

पहला चोर अपने चोर साथी से बोला– ''इतना सोना जिन्दगी में कभी देखा नहीं यदि यह हम दोनों को मिल जाए तो कभी जिन्दगी में चोरी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।''

दूसरा चोर बोला– ''सच कह रहे हो।''

पहला चोर– ''मैंने एक उपाय सोचा है।''

दूसरा चोर– ''क्या उपाय सोचा है।''

पहला चोर– ''हम दोनों झाड़ियों में छुप जायेंगे, जैसे ही वे दोनों खाना लेकर आएंगे, हम उन दोनों को गोली मार देंगे और फिर सोना हम दोनों का हो जाएगा।''

दूसरा चोर– ''यह अच्छा उपाय है।''

उसके बाद दोनों चोर बंदूकें लेकर झाड़ियों में छुप गए। उधर खाना लेने गए दोनों एक चोर एक होटल में गए, दोनों खाना खाने लगे, खाना खाते समय पहला चोर बोला– ''इतना सोना हमने पहले कभी नहीं देखा, मैंने एक उपाय सोचा है, दूसरे चोर ने पूछा– ''क्या उपाय सोचा है?''

चोर बोला– ''हमने तो खाना खा लिया है, हम खाने में ज़हर मिला देते हैं। ज़हर मिला खाना उन दोनों को खाने को दे देंगे। खाना खाते ही वे दोनों मर जाएंगे और फिर सोना हम दोनों आपस में बांट लेंगे।

चोरों ने खाने में ज़हर मिला दिया और ज़हर मिला खाना लेकर वे घोड़ों पर सवार होकर जंगल की तरफ चल दिए।

दोनों तरफ बराबर साजिश रची गई थी। जैसे ही दोनों झाड़ियों के पास आए, झाड़ियों में छिपे दोनों चोरों ने उन पर गोलियां चला दी। गोलियां चलते ही दोनों चोर वहीं ढेर हो गये। उनके मरते ही दोनों झाड़ियों से बाहर आए और झोपड़ी में जाकर खाना खाने लगे। दोनों बड़े प्रसन्न हो रहे थे परन्तु उन्हें यह नहीं मालुम था कि यह खुशी चन्द मिनट की है, जहर मिला कर लाया खाना उन दोनों ने खा लिया और वे दोनों भी वहीं ढेर हो गये। सोना वहीं का वहीं पड़ा रहा और चारों चोरों की मौत हो गई। अगर वे साधु–महात्मा की बात मान लेते तो बच जाते।

–बुजुर्गों ने सच ही कहा है कि ''लालच का फल बुरा ही होता है।''

पहेलियां

संग्रहकर्ता : डॉ. टुनटुन प्रसाद (दिघवा),
गोविन्द शर्मा 'भारद्वाज (अजमेर)

1 नया खजाना घर में आया
डिब्बे में संसार समाया,
नया करिश्मा बेजोड़ी का
नाम बताओ इस योगी का।

2 सात गांठ की रस्सी
गाठ गाठ में रस,
उसका उत्तर जो बतायें
भैया देगे रुपया दस।

3 एक मुर्गा आता है
चल चल कर रूक जाता है,
चाकू लाओ गर्दन काटो
फिर चलने लग जाता है।

4 सिर पर उसके देखा मटका
मटके को घर लाकर पटका,
कुछ को खाया, कुछ को फेंका
मटके का पानी भी गटका।

5 सर के नीचे दबा रहा
लेकिन चू तक न करता है,
बच्चों बोलो कौन है वो
जो साथ तुम्हारे सोता है।

6 बीमार नहीं रहती
फिर भी खाती गोली,
बच्चे बूढ़े डर जाते
सुन इसकी बोली।

7 लाल मुँह काला शरीर
कागज को वह खाता,
रोज शाम को पेट फाड़कर
कोई उसे ले जाता।

8 हमेशा रहता खिला–खिला
कीचड़ में जिसका तल है,
राष्ट्रीय पुष्प कहलाता वो
जीवन जिसका निर्मल है।

9 लाल–पीला, सफेद–गुलाबी,
रंग जिसका बड़ा अनूप,
चाचा नेहरू को था प्यारा
कांटो के संग खिलता खूब।

10 देख सूरज की जो रोशनी
अपनी गर्दन को है मोड़े,
उस फूल का नाम बतलाना
पाप लगे जो उसको तोड़े।

11 छोटी–छोटी कलियां जिसकी
दिन को लगती बड़ी सयानी,
रात को बिखराती खुशबू
मन को लुभाती बड़ी सुहानी।

12 एक कली है बड़ी नाजुक सी
जो अलग पहचान है कराती,
कोई उसको यदि छू देता
शरमा कर सिमट खुद जाती।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देंखे)

भैया से पूछो

प्रः इन्सान जानता है कि उसे गलत कार्य की सजा जरूर मिलेगी; फिर भी वह गलत कार्य क्यों करता है?
उः क्योंकि स्वार्थ उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है।

प्रः भैया जी, जब हम सेवा करते हैं तब मन में क्या भाव होना चाहिये?
उः सम्पूर्ण समर्पण भाव।

– अनिल कुमार (बउड़िया)

प्रः हमारी मनःस्थिति सन्तुलित कैसे बनी रह सकती है?
उः मन और हृदय को ज्ञानवान तथा विशाल बनाये।

प्रः मनुष्य दूसरों को बढ़ता देखकर जलता क्यों है?
उः क्योंकि वह वैसा बनने की सामर्थ्य नहीं रखता और न ही ऊँचा उठने के लिए मेहनत और यत्न करना चाहता है।

प्रः संसार में सबसे कठिन काम क्या है?
उः सदाचारी बनकर जीवन जीना।

प्रः सत्पुरुषों और गुरुओं से हमें क्या सीखना चाहिये?
उः जीने का सही ढंग।

– विनोद कुमार (इच्छापुर)

प्रः हमें 'धन निरंकार' कैसे व क्यों करनी चाहिए। करनी चाहिये तो उससे लाभ बतायें?
उः हर व्यक्ति में निराकार परमात्मा का वास है। हम चरणों को छूकर इस प्रभु निराकार को धन्य कहते हैं। चरणों में झुककर अपने अहंकार को भी हटाने का कर्म करते हैं इससे अहंकार का नाश होता है।

– आशीष कुमार (दिल्ली)

प्रः वन्दनीय कौन?
उः माता–पिता। दोनों ही जीवन में पहले दिन से आपकी रक्षा, जीवन सुचारु रूप से चले इसके लिए आवश्यक चीजों की व्यवस्था व शिक्षा आदि पूरे मनोयोग से दिन–रात करते रहते हैं और आपके कल्याण के लिए निरन्तर चिन्तित रहते हैं। इसलिए प्रथम गुरु भी माता–पिता ही हैं, उनसे अधिक आशीर्वाद कौन दे सकता है।

– रामशंकर गुप्ता (बिलासपुर)

प्रः 'विद्या ददाति विनयम्' कहाँ तक सत्य है?
उः सौ प्रतिशत। हाँ अधूरी विद्या अहंकार को जन्म देती है। अहंकार विनयशीलता के विपरीत भाव है।

प्रः भैया जी इन्सान को गुस्सा क्यों आता है?
उः अपनी सामर्थ्य की कमजोरी को न पहचान पाने के कारण।

– प्रहलाद जसवानी (मण्डला)

प्र: प्रश्न उ: उत्तर

मछलियां तरह–तरह की

धरती (थल) पर जितने किस्म के जीव–जंतु पाये जाते हैं, उससे कहीं ज्यादा समुद्र में रहते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि धरती का ज्यादातर हिस्सा समुद्रों से घिरा है। समुद्र में सबसे ज्यादा संख्या मछलियों की है। मछलियों में भी ज्यादातर ऐसी हैं जो अजीबोगरीब हैं।

कुछ नमूने पेश हैं–

ओशन सनफिश

इसे 'मोला' भी कहा जाता है। यह एक अजीब मछली है, जिसकी पूंछ उसके सिर जैसी होती है। इसलिए इसका सिर कौन–सा है और पूंछ कौन–सी है, यह पहचानना मुश्किल हो जाता है। जर्मनी में इसे 'तैरता सिर' कहकर पुकारा जाता है। यह मछली लंडूरी होती है और पूंछ से इसे तैरने में कोई मदद नहीं मिलती। यह बड़े आकार की मोटी खाल वाली मछली है। हड्डी बहुल मछलियों में यह सबसे ज्यादा वजनी है। इसकी लंबाई 3.3 मीटर तक, वजन 2241 किलोग्राम तक और त्वचा की मोटाई 15 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण ज्यादातर शत्रु इसका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाते।

क्रूसियन कार्प

यह शफरी जाति की एक छोटी यूरोपीय मछली है। पाइक जैसी मछलियां आसानी से इसका शिकार कर लेती हैं। लेकिन इसने अपने बचाव का तरीका निकाल लिया है। क्रूसियन कार्प के झुंड के बीच जब कोई पाइक मछली आ जाती है, तो एक रासायनिक संकेत से इन्हें उसका पता चल जाता है। वे अपनी पीठ पर मजबूत मांसपेशी का कूबड़ पैदा कर लेती हैं। कूबड़ के कारण उनका आकार इतना बड़ा हो जाता है कि पाइक मछली उन्हें निगल नहीं सकती।

फॉग फिश

इसे मेढक मछली भी कहा जाता है। इसकी नीली आँखों पर आपकी नजर न पड़े तो आप उसे शैवाल से ढका हुआ पत्थर का टुकड़ा समझेंगे। इसके सारे शरीर पर त्वचा की हल्की पट्टियां लहराती रहती हैं। यह चालाक मछली अपने मस्तक पर की पट्टियों को मिलाकर गांठ–सी बना लेती है। जब कोई छोटी मछली उस गांठ का निरीक्षण करने पास आ पहुँचती है, तब यह अपना विशाल मुँह खोलकर उसे पानी के साथ निगल लेती है।

टाइगर शार्क

यह मछली विश्व भर के गर्म जल स्थलों में पाई जाती है। यह खाने की हर चीज चट कर जाती है। जेलीफिश, समुद्री पक्षी, जहरीले समुद्री सांप से लेकर कठोर कवच वाले कछुए तक यह मछली

आसानी से खा जाती है। इसके दांत बहुत मजबूत होते हैं, जिनकी मदद से यह कछुए की हड्डियों और कवच को आसानी से चबा जाती है। समुद्र में डूब कर मरे पक्षी, घोड़े और गाय जैसे जानवरों के शव भी यह खा जाती है। अगर टाइगर शार्क का कोई दांत टूट जाता है, तो उसका स्थान पिछली पंक्ति में उगने वाला दांत ले लेता है। सभी शार्कों की तरह टाइगर शार्क के भी पूरे जीवन में हजारों दांत निकलते हैं।

सिसिलिड

यह मछली अफ्रीकी झीलों के मीठे पानी में रहती है और जो मिल जाए उसे चट कर जाती है। उसे मछलियों के शाल्क, पंख, अंडे, भ्रूण और लार्वा से कोई ऐतराज नहीं है। सिसिलिड की अलग–अलग प्रजातियों ने शिकार के अलग–अलग तरीके विकसित कर लिए हैं। जैसे 'स्केलपर' और 'फिन–बाइटर' प्रजातियां अपने शिकार का रंग ही धारण कर लेती हैं। इस तरह वे बिना कोई शक पैदा किए अपने शिकार के समूह में आसानी से घुस जाती हैं और शिकार करती हैं। सबसे अनोखी सीक्लिड होती है 'निम्बोक्रॉनिक्स लिविंग स्टॉनिक'। यह शांत स्थिर रहती है और मरने का ढोंग करती है। इसका रंग तब तक बदलता रहता है, जब तक कि यह एक मृत शरीर के समान नजर नहीं आने लगती। बचे–खुचे टुकड़े खाने वाली मछली इसकी तरफ आकर्षित होकर इसे खाने आती है, लेकिन वह खुद शिकार हो जाती है।

अपसाइड डाउन कैटफिश

पीठ के बल तैरने और अपना पेट ऊपर की तरफ रखने की आदत के कारण यह कैटफिश प्रजाति की मछलियों में कुछ अलग ही नजर आती है। अपनी इस आदत के कारण इसका नाम 'अपसाइड–डाउन कैटफिश' पड़ा है। ज्यादातर मछलियों की तरह इसका पेट रुपहला नहीं होता, बल्कि उसकी पीठ के रंग से कुछ गहरा होता है। इस तरह यह किसी का शिकार होने से बच जाती है।

क्रोकर

यह मछली ऐसी आवाजें निकालती है, जैसे कोई ढोल बज रहा हो। इसलिए इसे 'ढोल बजाने वाली मछली' भी कहते हैं। क्रोकर मछली अपने पेट में स्थित दो छोटी मांसपेशियों की मदद से ढोल जैसी आवाज पैदा करती है। ये मांसपेशियां पेट में ही स्थित एक छोटी–सी हवा भरी थैली 'स्विम ब्लैडर' से कम्पन्न के साथ टकराती हैं। ये मांसपेशियां एक सेकेंड में 24 बार कम्पन्न करती हैं। ज्यादातर मछलियों में स्विम ब्लैडर एक कोमल थैली जैसी रचना होती है, लेकिन क्रोकर के मामले में इसकी कई नलियां शाखाओं के रूप में निकली रहती हैं। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि स्विम ब्लैडर की यही अनोखी संरचना क्रोकर की आवाज के लिए जिम्मेदार होती है। सामान्य क्रोकर का वजन लगभग तीन किलोग्राम तक होता है, लेकिन कई ऐसे भी क्रोकर मिले हैं जिनका वजन सौ किलोग्राम से ज्यादा था। भारत के बहुत से इलाकों में क्रोकर व्यावसायिक मछली है। मांस एवं स्विम ब्लैडर के लिए इसका शिकार किया जाता है। स्विम ब्लैडर से सस्ता 'आइसिंग्लास' (एक प्रकार का जिलेटीन) बनाया जाता है।

प्रस्तुति : नीरज पाण्डेय ■

पहेलियों के उत्तर :

1.टेलिविजन, 2.जलेबी, 3.पेन्सिल, 4.नरियल, 5.तकिया, 6.बन्दूक, 7.लेटर बॉक्स, 8.कमल, 9.गुलाब, 10.सूरजुखी, 11.रातरानी, 12.छुईमुई।

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

कीमती पल

गुरप्रीत को बैट बल्ले से खेलना बहुत अच्छा लगता था। स्कूल में दाखिल हुआ तो दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने लगा। सुबह–शाम वह इसी खेल में रुचि लेता दिखाई देता। वह काफी फुर्तीला लड़का था।

गुरप्रीत जब आठवीं कक्षा में पहुँचा तो उसके स्कूल की क्रिकेट टीम का मुकाबला पास के स्कूलों की टीमों के साथ होने लगा। उनकी टीम मैच जीत कर आती तो उन्हें कई प्रकार के उपहार मिलते। स्कूल से अलग शाबाशी मिलती।

गर्मी की छुट्टियों में गुरप्रीत अपने ननिहाल आ जाता। उसके मामा जी का लड़का था, राहुल। राहुल को भी क्रिकेट खेलने का अच्छा–खासा शौक था। दोनों सुबह होते ही मैदान में चले जाते और लम्बे समय तक क्रिकेट खेलते रहते।

इस बार स्कूल में गर्मी की छुट्टियां हुईं तो गुरप्रीत फिर अपने ननिहाल आ गया। उसके मामाजी जिस गली में रहते थे उसी गली में एक बूढ़े बाबा भी रहते थे। लोग उसे 'नंद बाबा' के नाम से पुकारते थे। नंद बाबा एक छोटे से कमरे में रहते थे। निपट अकेले। वह एक रेहड़ी पर फल बेचकर अपना निर्वाह करते थे। खाना वह खुद ही बनाते थे लेकिन अब नंद बाबा कुछ कमजोर हो गये थे जिस कारण उनके लिए हर रोज सब्जी मंडी जाना मुश्किल हो गया था। नंद बाबा सप्ताह में दो बार ही मंडी जाते और रेहड़ी पर फल लाकर धीरे–धीरे आसपास की गली मौहल्ले में बेचते रहते।

गुरप्रीत को नंद बाबा बहुत अच्छे लगते थे क्योंकि बच्चों से वह बेहद प्यार करते थे। कई बार गुरप्रीत उनके पास जाकर बैठ जाता तो वह उसे प्यार से कोई न कोई फल देते। गुरप्रीत उन्हें पैसे देने लगता तो बूढ़े बाबा कहते, "अरे तुम तो हमारे नाती हो। तुम से पैसा लेता अच्छा लगता हूँ?"

फिर नंद बाबा उसे उसकी मम्मी की बातें सुनाते हुए कहते, "सोनिया भी बहुत छोटी थी। मेरे कंधों पर चढ़कर खेलती रहती थी। मेरे पास फल लेने आया करती थी। अब तो तुम्हारी मम्मी बन गई है।" यह कहकर नंद बाबा हँसने लगते।

अपनी मम्मी के बचपन की बातें सुनकर गुरप्रीत को मजा आता।

एक दिन गुरप्रीत और राहुल ने अपने दोस्तों के साथ मैच खेला। यह मैच शहर की एक संस्था ने करवाया था ताकि बच्चों की खेलों

में रुचि को बढ़ावा दिया जा सके। यह संस्था हर वर्ष मैच करवाती थी और विजयी टीम को अच्छा–खासा इनाम देकर सम्मानित करती थी। मैच देखने के लिए आस–पास के स्कूलों के बहुत से छात्र इकट्ठे हुए थे। गुरप्रीत ने अपनी टीम के साथ मिलकर खेल–कला का ऐसा प्रदर्शन किया कि देखने वाले दंग रह गये।

"यह बच्चा बड़ा होकर अच्छा क्रिकेटर बनेगा।" यह लड़का है या कोई ट्रेन?"

गुरप्रीत और राहुल की टीम ने मैच जीत लिया। दर्शकों की तालियों से आसमान गूंजने लगा। गुरप्रीत को 'मैन ऑफ द मैच' घोषित किया गया।

गुरप्रीत की टीम को जिले के डिप्टी कमिश्नर साहब ने इनाम देना था। समारोह का दिन निश्चित किया गया। गुरप्रीत को एक बड़ी ट्रॉफी डिप्टी कमिश्नर साहब ने अपने हाथों से भेंट करनी थी। गुरप्रीत के लिए यह एक यादगारी मौका था। गुरप्रीत चाहता था कि समारोह में उसके मम्मी–पापा भी जरूर शामिल हों। इसलिए उसने समारेह के एक दिन पहले मम्मी–पापा को फोन कर दिया।

समारोह से एक दिन पहले मम्मी–पापा भी आ गये। कार्यक्रम मैदान में ही होना था। पंडाल को रंग–बिरंगी झंडियों से सजाया जा रहा था।

समारोह के दिन सुबह से ही चहल–पहल नजर आने लगी। डिप्टी कमिश्नर साहब ने ठीक नौ बजे ग्राउंड में पहुँचना था और फिर विजयी टीम को इनाम देकर आधे घण्टे में ही अगले कार्यक्रम पर जाना था।

सुबह आठ बजे राहुल को अचानक याद आया कि उसने स्कूल के भूतपूर्व प्रिंसीपल श्री सोहनलालजी को भी समारोह में आने का निमंत्रण दिया था। गुरप्रीत तैयार हो चुका था लेकिन राहुल अभी तैयार नहीं हुआ था। उन्होंने यह भी कहा था कि समारोह के दिन याद करवा दें क्योंकि उनकी याद्दाशत थोड़ी कम हो रही थी।

"राहुल, तुम टाईम पर तैयार हो जाओ। मैं 'सर' का घर जानता हूँ। मैं उन्हें जाकर समारोह में आने के लिए कह कर आता हूँ।" गुरप्रीत ने कहा।

"ठीक है। लेकिन तुम तो जल्दी आ जाना।" राहुल ने उससे कहा।

गुरप्रीत ने साईकिल उठाई और सोहनलालजी के घर की ओर रवाना हो गया।

गुरप्रीत जब सोहनलालजी को संदेश देकर वापिस लौट रहा था तो चौक पर उसने देखा, नंद बाबा धीरे–धीरे रेहड़ी पर कुछ फल लादे घर की ओर जा रहे हैं। इससे पहले कि वह उनके पास आता, पीछे से आ रही एक कार ने उनकी रेहड़ी में टक्कर मार दी। कार वाला कार भगाकर ले गया। किसी देखने वाले ने बताया कि कार चालक मोबाइल पर बात करने में व्यस्त था जिसके कारण यह हादसा हुआ।

नंद बाबा जोर से सड़क पर गिर पड़े थे और वह बेहोश हो गये। उनकी दायीं बाजू टूट गई। चेहरे पर जख्मों से खून बहने लगा। गुरप्रीत उन्हें आवाजें देता रहा, लेकिन नंद बाबा का कोई जवाब नहीं आ रहा था।

गुरप्रीत ने इस हादसे को देखा तो वह एकदम घबरा–सा गया लेकिन फिर उसने धैर्य से काम लिया और नंद बाबा को संभाला। उसने अपनी साइकिल को ताला लगाया और वहीं दीवार के साथ खड़ी कर दी वह कोई और सहारा ढूंढने लगा।

तभी अचानक गुरप्रीत को एक कार आती दिखाई दी। गुरप्रीत ने फौरन कार सवार को हाथ दिया। कार सवार ने कार रोकी। गुरप्रीत ने कार चालक को नंद बाबा को तुरंत अस्पताल ले जाने की बिनती की। कार चालक बाहर आया। उसने जख्मी व्यक्ति को झट से पहचान लिया, "अरे ये नंद बाबा हैं। चलों पास के क्लीनिक में लेकर चलते हैं इन्हें।"

"लेकिन अंकल, पैसे?" गुरप्रीत का संकेत समझते हुए चालक बोला, "बेटा, तुम पैसों की चिंता मत करो। इनके इलाज के लिए पैसे मेरे पास हैं। चलो लेकर चलें इन्हें।"

चालक ने गुरप्रीत की मदद से नंद बाबा को पिछली सीट पर लेटा दिया और बिना कोई

समय गंवाये पास के एक क्लीनिक में ले आया। क्लीनिक के डॉक्टर ने नंद बाबा की स्थिति देखकर उसे फौरन बड़े अस्पताल में ले जाने की सलाह दी।

गुरप्रीत नंद बाबा को अस्पताल ले आया। डॉक्टरों ने तुरंत चैकअप किया। उन्होंने बताया कि नंद बाबा के सिर में भी चोट लगी है जिसके कारण वह बेहोश हो गये हैं। उनके टैस्ट होने लगे। इलाज शुरू हो गया। नंद बाबा को ऑक्सीजन भी लगाई गई। इसी प्रक्रिया में गुरप्रीत को अस्पताल में लगभग डेढ़ घण्टा लग गया। गुरप्रीत नंद बाबा को बचाने में इतना व्यस्त था कि वह भूल गया कि समारोह कार्यक्रम का समय तो हो चुका है। वह कभी स्ट्रेचर ला रहा था कभी 'कैमिस्ट शाप' से दवा। कुछ समय के बाद अचानक नंद बाबा के कहराने की आवाज आई। उन्होंने आंखें खोलीं तो गुरप्रीत ने चैन की सांस ली।

"मैं कहाँ हूँ?" नंद बाबा ने गुरप्रीत से पूछा।

गुरप्रीत ने सब कुछ बता दिया। फिर उसने कार चालक को समारोह वाली बात कही और कहा कि वह फिर अस्पताल में आ जायेगा। कार चालक बोला, "हाँ–हाँ बेटा, तुम कार्यक्रम जाओ। मैं इनकी देखभाल कर रहा हूँ।"

गुरप्रीत ने हादसे वाली जगह आकर दीवार के साथ खड़ी साइकिल को उठाया और समारोह की ओर बढ़ने लगा। जब गुरप्रीत समारोह में पहुँचा तो डिप्टी कमिश्नर साहब टीम को इनाम देकर जा चुके थे।

राहुल ने उसे आता देखा, तो कुछ गुस्से से उसकी ओर आया। बोला, "कहाँ खो गये थे? दो घण्टे से सारे तुम्हें ढूंढ रहे हैं?" स्टेज से तुम्हें बार–बार आवाजें दी जा रही थीं। यह समय अत्यंत कीमती था और तुमने वो कीमती पल खो दिये हैं। डी.सी. साहब इनाम देकर जा चुके हैं और तुम अब बजाओ बाजा।"

राहुल की यह गुस्से भरी बात सुनकर गुरप्रीत बोला, "राहुल मैंने कीमती पलों को खोया नहीं बल्कि संभाला है।"

"क्या मतलब? सीधी सीधी बात कहो, क्या कहना चाहते हो?" राहुल ने पूछा। →

बाल कविता : डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

प्यारी दीवाली आई है

कहीं नहीं अब दिखे अंधेरा,
दीप–ज्योति ने किया उजेरा।
मोमबत्तियां टिम टिम करतीं,
बिजली–झालर जलती बुझती।

परी फुलझड़ी लेकर आई,
अंशू ने फिर रेल चलाई।
उड़ा दिया राकेट डबलू ने,
दगा दिया तब बम बबलू ने।

नये वस्त्र हैं सबके तन पर,
खाते खूब मिठाई जमकर।
चारों ओर खुशी छाई है,
प्यारी दीवाली आई है।

कविता : बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

आई है दीवाली

घर दुकानें खूब सजी हैं,
आई है दीवाली।
दीपों की माला पहने,
आई प्यारी दीवाली।

मिटा अंधेरा आज धरा से,
कालिख हो गई दूर।
जगमग हुआ उजाला जग में
खुशियों से भरपूर।

बम पटाखे फूट रहे हैं,
छूट रही फुलझड़ियां।
और गगन में राकेटों की,
लगी हुई हैं लड़ियां।

सबको आई खुशी बांटने,
मनभावन दीवाली।
घर आंगन में सबके,
देखो छाई है खुशहाली।

→

जब तक मामाजी और मम्मी–पापा भी साथ आ खड़े हुए।

गुरप्रीत बोला, ''वास्तव में जब मैं 'सर' को प्रोग्राम में आने के लिए कहकर वापिस घर की ओर लौट रहा था तो रास्ते में नंद बाबा को किसी कार वाले ने टक्कर मार दी। मैं उस समय वहीं से ही गुजर रहा था। वे सड़क पर गिरते ही बेहोश हो गये थे और उनकी एक टांग टूट गई है। मैंने वहाँ से फौरन एक कार वाले अंकल को हाथ दिया। वे अंकल नंद बाबा को जानते थे। मैंने सही समय पर उनको अस्पताल पहुँचाया है। डॉक्टर बोल रहे थे, थोड़ी देर हो जाती तो उनकी जान को खतरा बन सकता था। लेकिन अब वे होश में आ गये हैं। मुझे नंद बाबा को उचित समय पर अस्पताल पहुँचाकर जो सुख मिला है, उसका बयान नहीं कर सकता।''

इससे पहले कि राहुल कुछ बोलता। मामाजी बोले, ''शाबाश गुरप्रीत! ऐसे संकट की घड़ी में किसी व्यक्ति को तुरंत अस्पताल ले जाने से ज्यादा कीमती पल भला और क्या हो सकते हैं? तुमने अपने इनाम की परवाह न करके नंद बाबा की जो मदद की है, उसके लिए तुम बड़े से बड़े इनाम के हकदार हो।''

बात राहुल की समझ में आ गई। ■

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा
(रेवाड़ी)

1			2	■	3
	■	■	4		
5		6		■	
■	■	7		8	■
9			■	10	
	■	11			■
12			■	■	13

बाएं से दाएं →

1. राजघाट और कर्मभूमि में से जो पूर्व राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा की समाधि का नाम है।
4. जिस देश की राजधानी अम्मान है।
5. अगर 29 अगस्त को रविवार हो तो 5 सितम्बर को .... होगा।
7. भगवान शिव का प्रिय वाद्ययंत्र।
9. .... मोहन मालवीय को 2014 में 'भारत रत्न' पुरस्कार दिया गया।
10. मध्य प्रदेश के किस शहर में हीरे की खाने हैं।
11. शरीर के जोड़ों का एक वात रोग।
12. 'अनारकली बाजार' पाकिस्तान के .... शहर में है।

ऊपर से नीचे ↓

1. भारत के मशहूर पर्यटन स्थल पहलगाम और गुलमर्ग जम्मू और .... राज्य में है।
2. मिजोरम विश्वविद्यालय किस भारतीय राज्य में स्थित है?
3. राजा .... भगवान श्रीराम के ससुर थे।
6. नरेन्द्र मोदी का जन्म मेहसाणा जिले के .... शहर में हुआ था।
8. भारत की मुद्रा।
9. पाकिस्तान की .... युसफजाई को 2014 का 'नोबल शान्ति' पुरस्कार प्राप्त हुआ।
13. अटल बिहारी वाजपेयी कितनी बार भारत के प्रधानमंत्री बने है?

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

पढ़ो और हँसो

पापा : बेटे, तुम स्कूल जाने से मना क्यों कर रहे हो?
बेटा : पापा, वहाँ जाकर करूंगा क्या? पढ़ना–लिखना मुझे आता नहीं, बात करूं तो टीचर जी मना करते हैं।

पापा : बेटे, तुम स्कूल जाने से मना क्यों कर रहे हो?
बेटा : पापा, वहाँ जाकर करूंगा क्या? पढ़ना–लिखना मुझे आता नहीं, बात करूं तो टीचर जी मना करते हैं।

संता : बुरे दिनों का क्या भरोसा? कुछ पैसे जोड़कर रखने चाहिए।
बंता : तुम जमा कर लो। मुझे तो तुम्हारा ही भरोसा है।

एक आदमी डॉक्टर से अपनी आँखों का परीक्षण करवा रहा था। उसने पूछा– डॉक्टर साहब! चश्मा लगाकर मैं पढ़ भी सकूँगा।
–हाँ, हाँ क्यों नहीं। – डॉक्टर ने कहा।
–ओह फिर तो काफी अच्छा रहेगा, अब तक मुझे पढ़ना नहीं आता था– आदमी बोला।

चना बेचने वाला: ले लो चना। एक बार खाओगे तो हजार बार खाओगे।
एक लड़का : मुफ्त में खिलाओगे तो बार–बार खायेंगे।

एक व्यक्ति : (अपने मित्र से) मेरी पत्नी मेरा बड़ा रौब मानती है जो भी कार्य कहता हूँ वह उसी समय कर देती है। कल रात 11 बजे मैंने कहा पानी गर्म करके लाओ और वह उसी समय करके ले आई।
दूसरा व्यक्ति : आपकी पत्नी तो बहुत अच्छी है।
पहला व्यक्ति : हाँ, मैंने कहा– ठण्डे पानी से मैं बर्तन नहीं धो सकूँगा।

– निशा चौधरी (आर.एस.पुरा, जम्मू)

डॉक्टर ने एक व्यक्ति की पूरी जांच–पड़ताल की फिर बोले– आप मुझे पहले यह बताइए कि आपके इस स्थायी सिरदर्द की वजह क्या है?

उसके पास बैठी उसकी पत्नी ने व्यक्ति के कान में फुसफुसाते हुए कहा– खबरदार! जो मेरा नाम लिया।

– किरन चौरसिया (खलीलाबाद)

एक किसान का ट्रैक्टर रास्ते में अचानक कीचड़ में फँस गया। तभी एक अंग्रेज आया उसने पूछा– 'व्हाट आर यू डूइंग?'

किसान बोला–माई ट्रैक्टर इज कीचड़ में फंसिंग, न हिलिंग, न डूलिंग; सिर्फ यों–यों करिंग।

पति जब ऑफिस से लौटे तो चाय–नाश्ता देकर पत्नी ने कहा– सुनो जी, आपकी नीली शर्ट प्रेस करते वक्त जल गई।
–कोई बात नहीं, मेरे पास उसी रंग की दूसरी शर्ट है।– पति बोला।
पत्नी : मुझे पता है तभी तो मैंने उस शर्ट में से थोड़ा कपड़ा काटकर जली कमीज में पैबन्द लगा दिया।

पहली औरत : क्या बताऊँ, मेरा मुन्ना तो हरदम अंगूठा ही चूसता रहता है, कोइ उपाय बताओ?
दूसरी औरत : तुम ऐसा करो, अपने मुन्ने को एक ढ़ीली निक्कर पहना दो, दिनभर वह अपनी निक्कर को ही सम्भालता रहेगा और अंगूठा चूसने की आदत छूट जायेगी।

संता : एक बार मेरे ऊपर से स्कूटर निकल गया पर फिर भी मुझे कुछ नहीं हुआ।
बंता : यह तो कुछ भी नहीं एक बार मेरे ऊपर से हवाईजहाज निकल गया, मैं फिर भी बच गया।

स्कूल में एक शिक्षा अधिकारी मुआयना करने आए तो देखा कि एक अध्यापक कुर्सी पर बैठे–बैठे सो रहे थे। अधिकारी ने उन्हें जगाया और पूछा– आप क्लास में सो रहे हैं?
अध्यापक : जी नहीं महोदय! मैं तो इन बच्चों को समझा रहा था कि प्राचीन काल में कुम्भकर्ण कैसे सोता था।

– भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

एक व्यक्ति अपने दोस्त से बोला – 'कोई ऐसी चीज बताओ' 'जो ब्रेकफास्ट में नहीं खायी जा सकती।'
दोस्त बोला : 'एक क्या!' मैं दो बताता हूँ।
व्यक्ति – ठीक है। दो बताओ।
दोस्त – 'लंच और डिनर'।

)

श्रद्धा : हे भगवान! जल्दी से अमिताभ बच्चन को भारत का प्रधानमंत्री और मुंबई को भारत की राजधानी बना दो।
माँ : बेटे! तुम ऐसा क्यों चाहते हो?
श्रद्धा : क्योंकि मैं परीक्षा में दोनों प्रश्नों का यही उत्तर लिखकर आई हूँ।

– निष्ठा आनन्द (लुधियाना

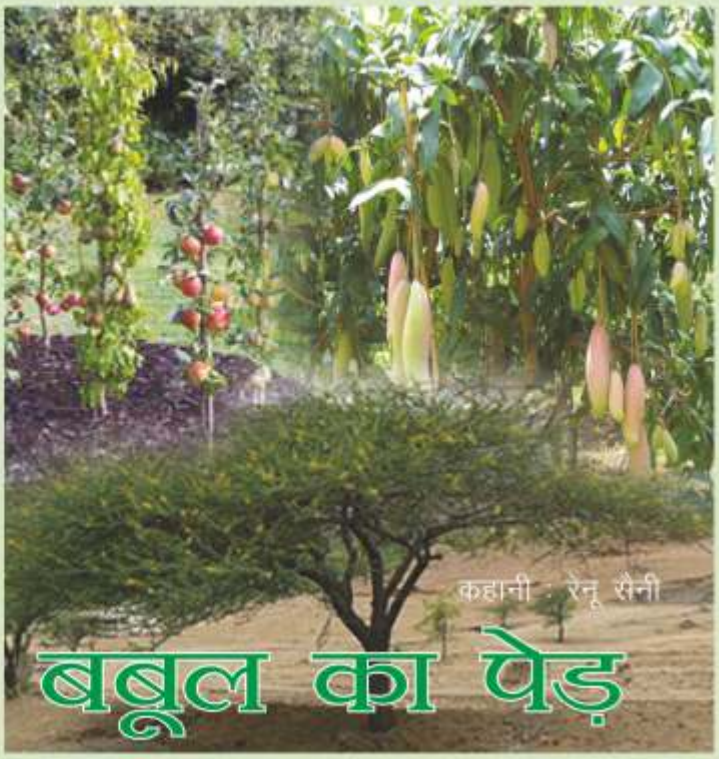

बबूल का पेड़

कहानी : रेनू सैनी

कानन वन में तरह–तरह के पेड़ थे। गुलमोहर, मौलश्री, आम, जामुन, बरगद, बबूल और न जाने कितने ही पेड़–पौधे उसकी शान थे। सभी पेड़–पौधे हवा में झूमते रहते, आपस में बातें करते, हवा के साथ बलखाते, सावन में बारिश की बूंदों के साथ नाचते गाते और प्रकृति को सुंदर व हरा भरा बनाते। गुलमोहर की खुशबू पूरे जंगल में फैली रहती। आम, जामुन, अमरूद, बेर भी अपने मौसम में खूब महकते और फलों के बोझ से उनकी शाखाएं झुक जातीं। सभी पेड़–पौधे जंगल में शान से रहते, आज़ादी की हवा में गाते–बतियाते।

खूबसूरत व सुंदर पेड़–पौधों ने बबूल को एक तरफ किया हुआ था। वह उससे बात भी नहीं करते थे। लेकिन बबूल अपने में मस्त रहता था। वह अपने व्यक्तित्व से खुश था। उसे प्रकृति ने कांटों के रूप में ही बनाया था। वह अपने रूप से खुश था। यह जानते हुए भी कि सब उसे नापसंद करते हैं, वह बराबर सब से बातें करता था। बबूल के नम्र व्यवहार के कारण अब कुछ पेड़–पौधे उससे बातें करने लगे थे और उसका आदर भी करते थे।

जंगल में जहाँ पेड़–पौधों की बहुतायत थी, वहीं वहाँ खूंखार जानवर भी रहते थे। वे प्रकृति के खुले वातावरण में विचरते थे, अपना शिकार करते थे और पेड़ व कंदराओं में रहते थे। पूरे जंगल में पेड़–पौधों की पत्तियों के साथ–साथ पशु–पक्षियों की आवाजें भी आती रहती थीं। सभी पशु–पक्षी दिन में अपने लिए भोजन–पानी की तलाश करते और दिन ढलने पर अपने–अपने घौंसलों व घरों की तरफ लौट पड़ते।

एक दिन एक नर्म सफेद मुलायम सा खरगोश सहमता हुआ पेड़–पौधों की ओट में जा छिपा। तभी वहाँ सभी पेड़–पौधों को शेर की भयंकर गर्जना सुनाई दी। शेर दहाड़ता हुआ उसी ओर आया। वह गुस्से में था। उसने अनेक छोटे पेड़–पौधों को अपने पैरों तले रौंदा और मासूम नन्हें खरगोश को तलाशने लगा। सभी पेड़–पौधे दम साधे खड़े रहे। नन्हा खरगोश बबूल के पीछे की झाड़ी में दम साधे खड़ा था। अचानक शेर ने सब ओर नज़र घुमाई। उसे बबूल की झाड़ी में से खरगोश की डरी और सहमी आंखें नज़र आईं। अब तो वह गुस्से में बबूल की ओर बढ़ा और छलांग लगा दी। लेकिन बबूल ने अपने नुकीले कांटे शेर की आंख की ओर बढ़ा दिये। बबूल की टहनी आंख में लग जाने पर शेर पीड़ा और दर्द से कराह उठा। आंखें बंद होने पर उसका संतुलन गड़बड़ा गया। वह सीधा बबूल की झाड़ियों पर गिरा और जख्मी हो गया। किसी तरह उसने स्वयं को बबूल की झाड़ियों से परे किया। इसी बीच नन्हा खरगोश कुछ और दूर जा चुका था। शेर घायलावस्था में कुछ देर तक वहाँ पड़ा रहा। कुछ देर बाद वह लंगड़ाते–लंगड़ाते वहाँ से दूर चला गया।

जब शेर वहाँ से ओझल हो गया तो छिपा हुआ नन्हा खरगोश बाहर निकलकर आया। उसने बबूल की झाड़ियों की ओर देखा। वह मुस्कुराया और प्यार से अपने पैरों को ऊपर उठाकर बबूल का धन्यवाद करने लगा। बबूल ने भी उसके धन्यवाद का अपनी टहनियों को हिलाकर जवाब दिया।

गुलमोहर, मौलश्री, आम, अमरूद, बेर, आड़ू और खजूर के पेड़ यह सब दृश्य देख रहे थे। वे बबूल से बोले, "आज हमें पता चल गया कि प्रकृति में हर वृक्ष, हर शाखा और फल का अपना–अपना महत्व है। अगर आज तुम नहीं होते तो यह नन्हा खरगोश नहीं बच पाता।

गुलमोहर का पेड़ बोला, "भले ही हमारी खुशबू चहुंओर फैल जाती हो लेकिन मदद की खुश्बू तो ऐसी है जो हर प्राणी को अपनी ओर आकर्षित करती है, और दूसरे को भी मददगार बनने के लिए उकसाती है। मदद करने की भावना हर किसी को अपना बना लेने की ताकत रखती है। वाकई आज तुमने हमें अपना मुरीद बना लिया है।"

मौलश्री का पेड़ बोला, "बिल्कुल सही कहा तुमने। आज बबूल ने मुझे भी बहुत बड़ी शिक्षा दी है कि हमें जहाँ तक हो सके सबकी मदद करने का प्रयास करते रहना चाहिए। दूसरे की मदद करने से मदद करने वाले के प्रति न सिर्फ आदर की भावना उत्पन्न होती है, बल्कि जिम्मेदारी का अहसास भी होता है।"

बबूल सब की बातें सुनकर बहुत खुश हो रहा था। आज उसे अपना महत्व और उपयोग समझ आ गया था। हालांकि पहले भी वह कभी अपने व्यक्तित्व को लेकर दुःखी नहीं था लेकिन आज उसके साथ–साथ उसके साथियों को भी उसकी उपयोगिता समझ में आ गई थी। नन्हा खरगोश वहाँ से इस वायदे के साथ चला गया कि समय मिलने पर वह यहाँ अपने परिवार के साथ आया करेगा और सब के साथ मिलकर खेला करेगा। इसके बाद मीठी–मीठी ठंडी बयार पूरे काननवन में फैल गई। सभी पेड़ पौधे हवा के साथ अठखेलियां करने लगे। इस बार उनकी अठखेलियों में बबूल का पेड़ भी शामिल था– एक अच्छे और नेक दोस्त के रूप में। •

कीटों की अद्भुत दुनिया

संसार में किसी भी अन्य प्रकार के जीवों की तुलना में कीटों की संख्या सर्वाधिक है। कीट परिवार में 10 लाख प्रजातियों का अध्ययन किया जा चुका है तथा इतनी ही प्रजातियों का अध्ययन अभी बाकी हैं। इनमें से कुछ अपने गुण, स्वभाव, आचरण और बनावट में किसी अजूबे से कम नहीं हैं। प्रस्तुत हैं कुछ कीट–पतंगों की विशेषताएं–

♦ ड्रेगनफ्लाई का अधिकांश जीवन उड़ते हुए बीतता है। उसे कीट जगत का हेलीकॉप्टर कहा जाता है। वह उड़ते हुए एक जगह पर ठहरे रहने या आगे–पीछे किसी भी तरफ बढ़ सकती है।

♦ मधुमक्खियों के एक छत्ते में 60 हजार तक की संख्या में तीन प्रकार की मक्खियाँ बसती हैं – रानी, राजकुमार और श्रमिक।

♦ दीमकों की रानी अपने जीवन में 10 से 12 लाख तक अंडे देती है।

♦ काक्रोच बिना कुछ खाए–पिए महीनों तक जिन्दा रह सकते हैं।

♦ तितलियों की कुछ प्रजाति दुनिया के एक भाग से दूसरे भाग में प्रवास करती हैं। इन्हें प्रवासी तिततियां कहते हैं।

♦ भूमध्यवर्तीय अफ्रीका में पाए जाने वाले कीड़े सबसे भारी होते हैं। जी. ड्रुरी जाति के ये कीड़े लंबाई में चार इंच किन्तु वजन में 100 ग्राम तक भारी होते हैं।

♦ छड़ी वाले कीड़े सबसे लंबे होते हैं। अफ्रीका का पेलोफस लियोपोल्डी नामक कीड़ा 15 इंच से भी अधिक लंबा होता है।

प्रस्तुतिः किरण बाला

एक अजूबा है मृतसागर

लेख : कैलाश जैन एडवोकेट

मृतसागर 'डेड–सी' दुनिया का एक अजूबा है। आप इसकी लहरों पर लेटकर इत्मीनान से अखबार पढ़ सकते हैं। लाख कोशिशों के बावजूद इस लहलहाते समुद्र में कोई डूब नहीं सकता। इस अद्भुत सागर की लम्बाई 48 मील तथा चौड़ाई 3 से 11 मील है। इसका जलस्तर समुद्री–सतह से 1280 फीट नीचे है। कहीं गहरे और कहीं उथले इस सागर की अधिकतम गहराई 1300 फीट तक है। मृतसागर संसार का सबसे अधिक खारे पानी का भंडार है। इसके पानी में नमक की मात्रा का परिमाण 27 प्रतिशत से भी अधिक है, जबकि अन्य महासागरों के पानी में नमक का परिमाण 3 से 6 प्रतिशत तक है। एक अनुमान के अनुसार, मृतसागर में मौजूद नमक का कुल परिमाण चार करोड़ टन के करीब है। यदि एक पात्र में मृतसागर का जल भरकर रखा जाए, तो पानी के वाष्प बनकर उड़ने के पश्चात पात्र में लगभग एक चौथाई भाग जितना नमक बचा रह जायेगा।

मृतसागर के पानी का घनत्व साधारण पानी की तुलना में 1.18 गुना अधिक है। घनत्व की यह अधिकता पानी में नमक की असाधारण मात्रा के कारण है। इसी कारण मनुष्य या कोई भी वस्तु मृतसागर में डूबती नहीं, तैरती रहती है।

भौगोलिक दृष्टि से मृतसागर जोर्डन और इजराइल की सीमा के बीच फैला हुआ है। इसके पूर्व की ओर जोर्डन स्थित है व पश्चिम की तरफ इजराइल बसा हुआ है। इस सागर में जोर्डन नदी के अतिरिक्त कुछेक छोटी–छोटी नदियां और मिलती हैं।

मृतसागर सदियों से आदमी की उत्सुकता और जिज्ञासा का केन्द्र रहा है। इसे लेकर कई अलग–अलग मान्यताएं व धारणाएं प्रचलित रही है। सर्वाधिक प्राचीन हिब्रू भाषा में मृतसागर को "थाम हमेलेक" नाम से सम्बोधित किया गया है। "जैनेसिस" में वर्णन आता है कि प्राचीन काल में पांच बड़े नगर मृतसागर में डूबकर नष्ट हो गए। इस सम्बन्ध में विस्तृत कथाएं इस पुस्तक में वर्णित है। कुछ ऐतिहासिक विवरणों में यह तथ्य मिलता है कि ईसाई धर्म के कुछ अनुयायी इस सागर को पवित्र मानकर यहाँ स्नान करने आए। मगर सागर में मौजूद लवण और अन्य घातक पदार्थों के विषाक्त प्रभाव के कारण उनकी मृत्यु हो गयी। उसी समय से इसे "मृत्यु का समुद्र" या मृतसागर नाम दे दिया गया। यहूदी समुदाय के लोगों ने इसे लवण का समुद्र नाम दिया।

मृतसागर की विचित्रताओं ने आदमी को हमेशा अपनी ओर आकृष्ट किया है। सन् 1806 में जर्मनी के दो वैज्ञानिकों, कोस्टीजन तथा सीट्सन ने मृतसागर के सम्बन्ध में अनुसंधान करने के प्रयास किए किन्तु अंततः वे दोनों ही प्लेग जैसी महामारी के शिकार हो गये। इसके बाद ब्रिटेन और अमेरिका के नाविकों द्वारा इस दिशा में प्रयास किए गए किन्तु मृतसागर क्षेत्र के निवासियों ने इसे अपने आराधना–स्थल पर विदेशी आक्रमण मानकर इसका विरोध किया। अरस्तु स्ट्राबोर्न और टेसीटास ने मृतसागर के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण शोध किया। स्ट्राबोर्न ने अपने ऐतिहासिक विवरण में बताया कि मृतसागर में कम से कम तेरह सुविकसित नगर पूरी तरह डूब गए। उसके अनुसार इस सागर में डूबे हुए शहरों के भग्नावशेष अब भी मौजूद है। ब्रिटेन के नागरिक स्टेनफील्ड की भी मान्यता है कि मृतसागर में नमक की अत्यधिक अधिकता का मुख्य कारण नष्ट हुए नगरों और चट्टानों का पानी में घुलना है। अमेरिकी शोध वैज्ञानिक डॉ. वाल्टर स्टोकेनियस द्वारा मृतसागर के पानी के नमूनों का व्यापक विश्लेषण किया गया और इस पानी में नमक पर

ही जीवित रहने वाले एक सूक्ष्म जीवाणु 'हेलोबेक्टीरियम हैलोबियम' की खोज की गयी। इस जीवाणु में बैंगनी रंग का एक विशेष पिगमेन्ट पाया जाता है, जो नमकीन पानी को मीठे पानी में बदलने की प्रक्रिया में सहायक हो सकता है। साथ ही यह पिगमेन्ट नेत्र–सम्बन्धी रोगों की चिकित्सा में भी उपयोगी है।

ऐसा नहीं है कि मृतसागर में सिर्फ नमक ही नमक हो, इसमें पोटाश, मैग्नीशियम, क्लोराइड, ब्रोमाइड तथा अन्य खनिज व रासायनिक तत्त्व मौजूद है। मृतसागर के नीचे तक (3660) मी. इस आशा के साथ खुदाई की गयी कि संभवतः यहाँ तेल मिल सकता है। तेल प्राप्ति की आशा तो पूर्ण नहीं हो सकी, अलबत्ता इस खुदाई के दौरान भू–गर्भ वैज्ञानिको ने 'डनआयला' नामक एक सागरीय शैवाल अवश्य खोज निकाला, जिससे पेट्रोलियम प्राप्त हो सकता है। मृतसागर के भीतर के खनिज पदार्थों के दोहन के उद्देश्य से इसकी दक्षिण–पश्चिम सीमा के समीप 'सेडम' नामक क्षेत्र में इजराइल ने एक अत्याधुनिक संयंत्र स्थापित किया है, जो सागर में स्थित प्रचुर खनिज सम्पदा को बाहर निकाल रहा है।

खनिज संपदा से सम्पन्न मृतसागर मछलियों और अन्य समुद्री जीवों के वास्ते 'मौत का दरिया' है।

अत्यधिक नमक और अन्य रासायनिक पदार्थों की उपस्थिति ने इस सागर के पानी को जलचर प्राणियों के लिए सर्वथा वर्जित बना दिया है। जोर्डन नदी तथा अन्य नदियों के साथ बहकर आने वाली मछलियां मृतसागर में आते ही तत्काल मर जाती है। ये मृत मछलियां समुद्री पक्षियों का आहार बन जाती हैं।

मृतसागर के पानी में असाध्य रोगों के रामबाण उपचार की विशेषता होने संबंधी अनेकानेक किंवदंतियां प्रचलित रही है। इसके चलते आज भी विश्व के सभी मार्गों से हजारों

लोग इसके पानी से अपनी बीमारियों के उपचार के वास्ते यहाँ आते हैं। कहा जाता है कि ग्रीस के राजा हैरोड का उपचार मृतसागर के जल से ही किया था और वह असाध्य रोगों से मुक्त होकर मौत के मुँह से बाहर निकल आया था।

एक भूगोल शास्त्री जोसेफ्स का मानना है कि इस सागर में 'सोलनम सोडेनियम' नामक सेब का ऐसा वृक्ष था, जिसके फल का स्पर्श करते ही वह राख व धुएं में बदल जाते थे। आधुनिक चिकित्सा विज्ञानियों ने समुद्र–तट की मिट्टी का रासायनिक विश्लेषण करने के पश्चात पाया कि इस मिट्टी में 'बेरियम' नामक रेडियोधर्मी पदार्थ के अंश मौजूद है, जिसे असाध्य रोगों के उपचार हेतु उपयोगी माना जाता है।

मृतसागर का एक बहुत बड़ा हिस्सा इजराइल के आधिपत्य में है। 1967 के अरब–इजराइल युद्ध के दौरान इजराइल ने इस पर अधिकार किया था। मृतसागर को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की दिशा में इजराइल ने काफी परिश्रम किया है तथा काफी धन इस कार्य में लगाया। आज सागर तट पर सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। जगमगाती रोशनियों और चौड़ी सुन्दर भव्य सड़कों ने मृतसागर तट का हुलिया ही बदल कर रख दिया है।

मृतसागर विचित्रताओं से भरी इस दुनिया का एक विचित्र और नायाब नमूना है, जो सदियों से अपने सीने में न जाने कितने रहस्य समेटे हुए है।

जन्मदिन मुबारक

सुमित, ममता (परागपुर)

लक्ष्य (बाबरपुर मण्डी)

गीत (दिल्ली)

अराध्या (दिल्ली)

समर्पित (भाण्डुप)

नितप्रीत (अमृतसर)

सक्षम (मऊरानीपुर)

प्रभजोत (अमलोह)

वंदिता (जामनगर)

कनिका (इन्द्री)

सैहज (जम्मू)

प्रगति (रायपुर)

हिमांशु (अमृतसर)

धृवेन (भयन्दर)

नवजोत कौर (दिल्ली)

प्रांजल (घरौडा)

आयुष (मरोली बाजार)

कीर्ति (रावतसर)

मनवीर (बोधाराय कलां)

जसकीरत (दिल्ली)

वंशिका (यमुना नगर)

डिम्पी (आगरा)

सुहानी (ठाणे)

विनीत (बाबरपुर मण्डी)

तन्मय (दिल्ली)

विदित (दिल्ली)

ममता (भूचो मण्डी)

स्वधा (गोरखपुर)

आदर्श (खानपुर)

बन्नी कौर (करनाल)

अविनाश (होशियारपुर)

स्नेहा (शिमला)

प्राशी (दिल्ली)

अरविन्द (माढा)

सहज (करनाल)

सिमरजीत (दिल्ली)

शशांक (मिर्जापुर)

यूहिना (कोलकाता)

कौस्तुभ (कल्याण)

शुदित (दिल्ली)

समदृष्टि (पटियाला)

कौणार्क (नारनौल)

एहना (फरीदाबाद)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

सितम्बर अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम :

शिवानी भण्डारी
12 वर्ष
गाँव : आमपाटा, डाक : जाजल
जिला : टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

द्वितीय :

अक्षय कुमार
15 वर्ष
गाँव व डाक : चम्बोह
जिला : हमीरपुर (हि.प्र.)

तृतीय :

कौशल प्रसाद साहू
14 वर्ष
गाँव व डाक : टेमरी
जिला : बेमोतरा (छ.ग.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

वैभव किशोर (डांगोली),
रोधिक कुमार (कोटला, कांगड़ा),
दीक्षा (देहरा, कांगड़ा),
आकाश गुलेरिया (छत्री, कांगड़ा),
मोहित कुमार (मालवीय नगर, जयपुर),
अमरजीत सिंह माहौर (धारानौला, अल्मोड़ा),
नेहल महेश चावला (मूर्तिजापुर, अकोला),
रवि कुमार कुकड़ेजा (खुई–खेड़ा, फाजिल्का),
सुदीक्षा राठौर (कवैया, पूर्वी चम्पारण),
प्रत्यक्ष मोहता (बिरहाना रोड, कानपुर),
स्नेहल (मझौल, बेगूसराय),
भाविका (पंजाबी बाजार, जीन्द),
नवीन कुमार (रिकॉंग पेओ, किन्नौर),
प्रिया (उमरगांव, वलसाड),
दिशा सिंह (बेवरली पार्क, ठाणे)
सांझी (जरीपटका, नागपर)।
राधा (मुकुन्दपुर, दिल्ली)
नीतू सिंह (निरंकारी कालोनी, दिल्ली)

नवम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 15 नवम्बर तक कार्यालय हँसती दुनिया, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जनवरी 2016 अंक में प्रकाशित किये जायेंगे। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

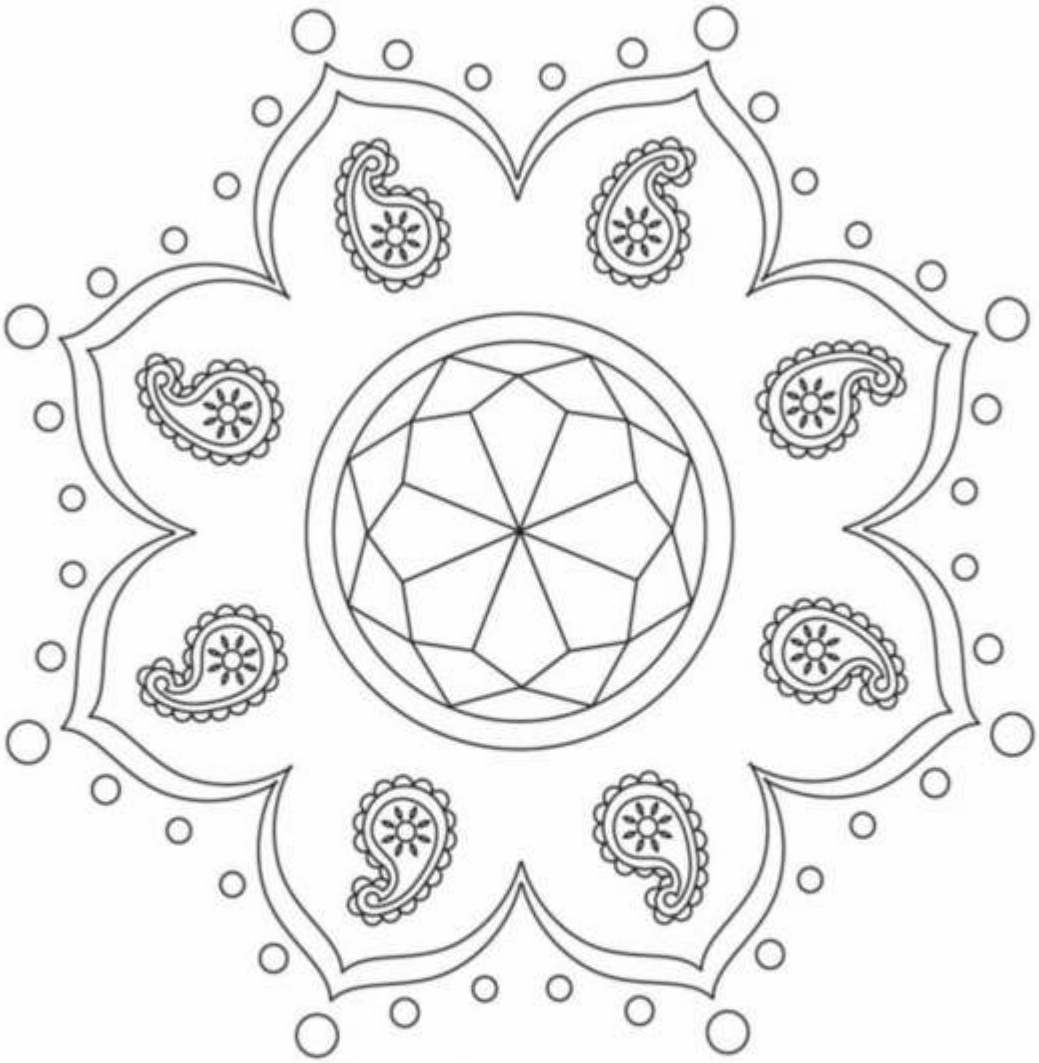

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया का है यह सम्मोहन,
कि बार–बार मन को करता है
करने का इसका पठन।
हँसती दुनिया का सहारा
जिस किसी को मिल जाए कभी।
समझो जीवन में सफलता की कुंजी मिल गई
उसे तभी।
'गागर में सागर' कुछ इसे हैं कहते,
बड़ाई करते इसकी कुछ नहीं हैं थकते।
अन्य पत्रिकाओं की तुलना में है यह सस्ती,
तभी तो पाठकों को इसका क्रय करने में जरा भी
नहीं खलती।
हँसती दुनिया रूपी सूर्य की किरणों से आता है
ऐसा प्रभात।
कि ज्ञान और अनुशासन का दीया जलता है
जिसके शिकार बनते हैं हर तरह के उपद्रव एवं
उत्पात।

– रवीन्द्र प्रसाद सिन्हा (कटकोना)

मैं पिछले दो सालों से हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। पत्रिका का नया रूप मुझे बहुत अच्छा लगा, इसके लिए हँसती दुनिया पत्रिका परिवार को बहुत बधाई।

हँसती दुनिया का बदला हुआ स्वरूप का जुलाई अंक पढा, जिसमें सम्पादकीय लेख 'लक्ष्य हमारा – हँसता जीवन' बहुत अच्छा लगा। 'चाँदी के बर्तन', 'कभी देखा है ऐसा पेड़' बहुत रोचक और ज्ञान बढाने वाला था।

कहानी 'सजग महात्मा' तथा चित्रकथाएं 'चिंकी और सी हॉर्स' एवं 'माइक्रोस्कोप' शिक्षाप्रद थी। इनसे अच्छी जानकारी मिली।

स्तम्भ 'भैया से पूछो', 'अनमोल वचन', 'कभी न भूलो' बहुत अच्छे लगते हैं। इनसे जानकारी और ज्ञान में वृद्धि होती है।

–विष्णुदेव मण्डल (गनौली, समस्तीपुर)

हम हँसती दुनिया के जुलाई अंक को नये रूप में देखकर फूले नहीं समाये।

इस हँसती तथा ज्ञान विकास की दुनिया के हम आभारी हैं, जो बच्चों और नवयुवकों की तथा वयोवृद्धों के लिए ज्ञान की सम्पदा लिए प्रतिमाह सज–धज कर प्रस्तुत होती है।

नीतियुक्त तथा स्पर्धात्मक युग का खजाना एवं मनोरंजन की आभा से भरपूर शायद ही कोई पत्रिका हो।

–अंबले बाबूराव, चिटगुप्पा (बीदर, कर्नाटक)

सफाई
साफ–सफाई करो सदा ही,
बच्चों इसमें तुम्हारी भलाई।
स्वच्छ रहोगे यदि तुम सदा,
बीमार नहीं पड़ोगे तुम कदा।
सदा हाथ धोकर भोजन करना,
कीटाणुओं का साथ न करना।
सदा स्वच्छ जल का करना उपयोग,
बीमारी का फिर होगा ना उपभोग।

– अजय डिमरी (पौड़ी)

बाल विकास की ओर-एक समीक्षा

– सी. एल. गुलाटी (दिल्ली) मैम्बर इंचार्ज, पत्रिका विभाग

लेखक : श्री विकास अरोड़ा
प्रकाशक : सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली –9
उपलब्धता : सन्त निरंकारी मण्डल के प्रकाशन स्टाल
पृष्ठ संख्या : 130, मूल्य : 15 रुपये

सन्त निरंकारी मिशन बच्चों को आध्यात्मिक जागरुकता के साथ जोड़कर नैतिकता के ऐसे गुण प्रदान कर रहा है जो उन्हें नेक तथा अच्छे नागरिक बनने में सहायक सिद्ध होते हैं। इसी कड़ी में सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा पुस्तक 'बाल विकास की ओर' प्रकाशित की गई है जिसमें बाल विकास से सम्बन्धित विनम्रता, शुकराना, आत्मविश्वास, सकारात्मक नज़रिया, सहनशीलता, भाषण कला, देहभाषा, अहंकार, नेतृत्व, प्रशंसा इत्यादि 42 विषयों पर लेख प्रस्तुत किये गये हैं। इनमें से कुछ के शीर्षक हैं– गुणों का विकास करें, सकारात्मक नजरिया = 100% सफलता, सीखें अच्छा बोलने का हुनर, हौंसले और हिम्मत से काम लें, सीखें फोन पर बात करने का सलीका, नेतृत्व का गुण विकसित करें, समय की कद्र करें, बहुत बुरा है टालमटोल करना और गुस्से को काबू में रखें इत्यादि।

बाल साहित्य लेखन ऐसी विधा है जिसमें निपुणता के लिए खुद को बच्चों के धरातल पर रखना जरूरी होता है। बच्चों के मनोविज्ञान के समावेश से ही बाल साहित्य उत्कृष्टता की श्रेणी में आ सकता है। इस पुस्तक में ऐसी सभी खूबियां मौजूद हैं। इसके हर लेख में एक गूढ़ संदेश छिपा है। लेखक ने ऐसी सहज और सरल भाषा का इस्तेमाल किया है जिससे ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे पाठक से आमने–सामने बैठकर बात कर रहे हों।

उन्होंने लेखों को इस प्रकार से बुना है कि पाठक की जिज्ञासा अन्त तक बरकरार रहती है। इस पुस्तक में मन इस कदर रम जाता है कि पूरी पुस्तक को एक ही बार पढ़ लेने की इच्छा होती है। अनेक कथाओं, प्रसंगों व उदाहरणों को इस तरह से कलात्मक ढ़ंग से पिरोया गया है कि वे मुख्य कथानक का अभिन्न अंग प्रतीत होते हैं। कम से कम शब्दों में बड़ी से बड़ी बात कह जाना लेखक की विशेषता है। लेख भले ही आकार में छोटे हैं लेकिन उनमें छिपे भाव बहुत गहरे हैं, इसलिए, वे मन पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

लेखों में दिये गये सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज, बाबा गुरबचन सिंह जी और राजमाता जी के प्रवचनों के छोटे–छोटे अंश तथा सम्पूर्ण अवतार बाणी के पद भी प्रभावित करते हैं। पुस्तक की छपाई और कागज दोनों ही उच्च स्तर के हैं। मुखपृष्ठ भी प्रभावशाली, मनोहर व आकर्षक है। यह पुस्तक इन्सान के जीवन को सही दिशा प्रदान करती है। सच यही है कि दिशा सही हो तो दशा खुद–ब–खुद बेहतर हो जाती है। इस पुस्तक से केवल बच्चे ही नहीं बल्कि बड़े भी लाभ उठा सकते हैं।

130 पृष्ठों की इस पुस्तक की कीमत सिर्फ 15 रुपये रखी गई है। इतनी कम कीमत में आजकल कोरी कॉपी भी नहीं मिलती। हर छोटे–बड़े शहर में सन्त निरंकारी सत्संग भवन बने हैं जहाँ प्रायः रविवार की साप्ताहिक सत्संग के समय प्रकाशन स्टाल खुलते हैं। यह पुस्तक इन प्रकाशन स्टाल पर उपलब्ध है। यह पुस्तक उपहार रूप में भेंट करने के लिए भी उपयुक्त है, इसे खुद भी पढ़ें तथा अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों को भी दें। केवल छः मास के अल्प अंतराल में ही इस पुस्तक का तीसरा संस्करण प्रकाशित होना इसकी लोकप्रियता तथा उपयोगिता को स्वयं सिद्ध करता है।

उल्लेखनीय है कि इस पुस्तक के लेखक श्री विकास अरोड़ा कई वर्षों से निरंकारी पत्र–पत्रिकाओं के लेखक के रूप में अपनी सेवाएं अर्पित कर रहे हैं। 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, अंग्रेजी व मराठी) में इनकी अब तक 700 से अधिक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्हें इस ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक एवं रोचक पुस्तक के लिए 'हँसती दुनिया' परिवार की ओर से बधाई।

वर्ग पहेली के उतर

1 क	र्म	भू	2 मि		3 ज
श्मी			4 जो	र्ड	न
5 र	वि	6 वा	र		क
		7 ड	म	8 रु	
9 म	द	न		10 प	न्ना
ला		11 ग	ठि	या	
12 ला	हौ	र			13 दो

TU HI NIRANKAR

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SUPER AQUA®

R.O. System

WHITE GOLD®

AQUA FRESH

Reverse Osmosis

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

Wholesale & Retailer of all type of **Water Purifier, Water Dispenser, R.O. System & Commercial R.O System 100 to 500 Ltr.**

Free Gift
(5Ltr. Cooker)

Free Gift
(Juicer Mixer)

Free Gift
(Toaster)

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

FREE DEMO
WATER TESTING

आसान किस्तों पर उपलब्ध
0% FINANCE

for enquiry call Customer Care

09650573131

(Arvind Shukla)

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

SATGURU HOME APPLIANCES
(Call. 09910103767)

Head office. E-1/23, Ground Floor Sec-16, Rohini Nr. Jain Bharti Public School, Delhi-110085

Mumbai office. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex Nr. T.V Tower, Badlapur (East) Thane, Maharashtra,

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा, दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, ब्लकि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विराधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाऐं।

MUBAI : Vorivali, Kurla, Dadar, Thane, Ulhas Nagar, Kalyan, Badlapur **MAHARASHTRA** : Pune, Aurangabad, Varsa, Nagpur, Buland, Kohlapur
SOUTH INDIA : Hyderabad, Belgaum **UTTAR PRADESH** : Allahabad, Gorakhpur, Mathura, Agra, Kanpur, Jonpur, Lucknow, Azamgarh
UTTRAKHAND : Dheradun, Haldwani, Rishikesh, Haridwar **PUNJAB** : Chandigarh, Hoshiarpur, Bhatinda, Patiala, Jalandhar, Ludhiana
BIHAR : Patna, Samastipur, Darbhanga, Gaya, Bhagalpur **WEST BENGAL** : Kolkata, Sealdah **RAJASTHAN** : Jaipur, Jodhpur

Service with Humility

NIIT FOUNDATION

NIRANKARI VOCATIONAL CENTER

Offers

Computer Education Program

Accredited by

NIIT FOUNDATION

ADMISSION OPEN

Courses offered

#	COURSE	DURATION
1	TALLY ERP 9	3 months
2	DTP	4 Months
3	WEB DESIGNING	2 Months
4	ADVANCE EXCEL	3 Months
5	BASIC IT	4 Months

Note : 1. The course fee is for the whole course and includes course material, assessment charges and registration fee. No Hidden Cost involved.
2. All the courses are assessed and certified by *NIIT FOUNDATION*

OUR CENTERS :

#	LOCATION	CONTACT PERSON	PHONE NUMBER
1	NIRANKARI COLONY	SONIA BABBAR	9654244598
2	TILAK NAGAR	SUNITA	9899015663
3	MALVIYA NAGAR	GEETA KUMAR	9818371090
4	FARIDABAD	MANOJ KUMAR	8506924747

Nirankari Vocational center is a skill development center run by Sant Nirankari Charitable Foundation (Regd), New Delhi with an academic tie up with NIIT Foundation, Delhi with an objective to provide IT related courses at nominal prices

Head office :
Sant Nirankari Charitable Foundation, Nirankari Complex,
Nirankari Chowk, Burari Road, Delhi – 110009. Ph : 011 47660380
Website : www.niranakrifoundation.org

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)